Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

भिक्षु वाणी

जे अणांचारी थका आचार बतावें,
ते यूंही अन्हाखी कूकें।
जांणें गायां तणां टोलारे मांहिं,
निकेवल गधा ज्यूं भूके।।

जो स्वयं आचारहीन है और दूसरों को आचार का उपदेश देता है वह व्यर्थ ही बकवास कर रहा है। ऐसा लगता है मानो गौओं के टोले में गधा रेंक रहा है।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 28 • अंक 04 • 26 अक्टूबर - 01 नवम्बर 2026 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 24-10-2026 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये



'अनावश्यक संग्रह और कषायों का त्याग ही है सच्ची प्रतिरूपता' : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 03



'श्वेतांबर हो या दिगंबर, कषाय-मुक्ति ही है मोक्ष का सच्चा द्वार' : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 13

Address Here

सुधर्मा सभा में पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने प्रतिपादित किया वैयावृत्य का मर्म

'सेवा उपकार नहीं, आत्मा को तीर्थंकर बनाने की साधना है' : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया—सेवा लेने और देने वाले दोनों में हो समता का विवेक

लाडनूं।
15 अक्टूबर, 2026



जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर प्रभु महावीर के प्रतिनिधि, ज्योतिपुंज, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में प्रतिदिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त कर रहे हैं। नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान के अंतर्गत आज सुधर्मा सभा में मुख्य प्रवचन कार्यक्रम से पूर्व पूज्य प्रवर ने निर्धारित मंत्रों का जप करवाया। तत्पश्चात् निर्धारित प्रवचन विषय 'वैयावृत्य से क्या मिलेगा?' पर आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान किया।

> सेवा लेने वाला कभी कुपित भी हो जाए, तो सेवा करने वाले को आवेश में न आकर समता में रहना, सहना और सेवा देना ही सच्ची साधना है
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

आभ्यंतर तप 'वैयावृत्य' और सेवा का सार्वभौमिक स्वरूप :

१. तप के भेद और निर्जरा का साधन: आचार्यश्री ने फरमाया कि आगमों में तप के १२ भेदों का निरूपण किया गया है, जिनमें ६ बाह्य तप के और ६ आभ्यंतर तप के भेद हैं। आभ्यंतर तप के छह प्रकारों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रकार 'वैयावृत्य' (सेवा) है। वैयावृत्य आत्मा के कर्मों की निर्जरा का एक महान साधन है।

२. मानव, पशु जगत् और साधु जीवन में सेवा : पूज्य प्रवर ने सेवा की उपयोगिता को रेखांकित करते हुए फरमाया कि सेवा एक ऐसा पावन तत्त्व है जिसकी उपयोगिता साधु समुदाय के साथ-साथ गृहस्थों और पशु जगत् में भी देखने को मिलती है। मनुष्य द्वारा एक-दूसरे की चिकित्सा व सेवा करना सामान्य बात है, परंतु कई पशु चिकित्सक मूक पशुओं की भी चिकित्सा और सेवा करते हैं—यह विशेष बात है कि जीवमात्र की चिंता की जाती है। इसी प्रकार साधु समुदाय में भी सेवा की बहुत बड़ी उपयोगिता है; एक साधु दूसरे चारित्रात्मा की सेवा करे और जो सेवा लेने के अधिकारी या सेवा-सापेक्ष हैं, उनकी निष्काम भाव से सेवा की जानी चाहिए।

संघ इतिहास, आचार्य-युवाचार्य पद व सेवा के ऐतिहासिक दृष्टांत :

१. आचार्य व युवाचार्य की सेवा : आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि आचार्य की सेवा करना भी वैयावृत्य ही है, भले ही वे वृद्ध न होकर युवा ही क्यों न हों। युवाचार्य को भी आचार्य का ही प्राथमिक रूप मानते हुए उनकी भी सेवा-वैयावृत्य की जाती है।

(शेष पेज 12 पर)

बड़ा निर्णय लेने से पहले... पूज्य आचार्यश्री का पावन सूत्र!

'सघन साधना शिविरार्थियों की शंकाओं पर पूज्य प्रवर का समाधान और व्यावहारिक जीवन-मार्गदर्शन...'

1. युवाओं में धार्मिक मान्यताओं और कर्म-सिद्धांत पर विश्वास कैसे जगाएं?

पावन समाधान : आचार्य श्री ने फरमाया कि बच्चों और युवाओं को संतों के सानिध्य में लाएं। उन्हें संतों के सेवा-कार्यों, दीक्षा समारोहों और उनके त्यागमय जीवन को प्रत्यक्ष देखने का अवसर दें। जब वे संतों का प्रभाव और साधना की शक्ति स्वयं अपनी आंखों से देखेंगे, तो उनका विश्वास स्वतः ही जागृत होने लगेगा।

2. अच्छे कार्य करने के बावजूद भी जीवन में दुःख और विघ्न क्यों आते हैं?

पावन समाधान : आचार्यप्रवर ने समझाया कि कल्याणकारी और शुभ कार्यों में विघ्न भी आ सकते है। यह हमारे पूर्व-अर्जित विपरीत कर्मों का फल हो सकता है। ऐसे कठिन समय में निराश होने के बजाय व्यक्ति को अपना मनोबल बनाए रखना चाहिए तथा समता और शांति के साथ कष्टों को सहन करना चाहिए।

3. जीवन में महत्वपूर्ण और कठिन निर्णय कैसे लें?

पावन समाधान : पूज्य आचार्य श्री ने एक अत्यंत व्यावहारिक और महामंत्र का संबल देते हुए फरमाया: 'यदि आपको जीवन में कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेना हो, तो सबसे पहले नवकार मंत्र का जप करना चाहिए।'

'युवाचार्य जी! मगन आप रै सागै है...'

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि— सीढ़ियों पर बढ़ा वह हाथ केवल शारीरिक सहारा नहीं, बल्कि पूरे संघ के संबल और आश्वस्त करने का प्रतीक था!

1. गंगापुर का ऐतिहासिक संदर्भ और परिस्थितियाँ : आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कालजयी इतिहास का स्मरण कराते हुए फरमाया कि जब तत्कालीन आचार्य, परम पूज्य कालूगणी शारीरिक रूप से अत्यंत अस्वस्थ थे, उस समय युवा मुनि श्री तुलसी (बाद में आचार्य श्री तुलसी) को युवाचार्य पद का महान दायित्व सौंपा गया था।

2. सीढ़ियों का सहारा और वरिष्ठ मुनि का पावन संबल : आचार्यप्रवर ने गंगापुर के इस भावुक प्रसंग का स्मरण कराते हुए फरमाया कि जब लगभग 22 वर्ष के युवाचार्य श्री तुलसी 'पंचमी' के लिए पधार रहे थे और सीढ़ियाँ उतर रहे थे, उस समय आयु में उनसे काफी वरिष्ठ मुनि श्री मगनलाल जी ने आगे बढ़कर सहारा देने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। वरिष्ठता के भाव से परे होकर दिया गया यह संबल संघ-समर्पण का एक अनुपम उदाहरण था।

3. 'मगन आपके साथ है': सहयोग का वास्तविक मर्म : आचार्य श्री ने गहरा आध्यात्मिक मर्म प्रकट करते हुए फरमाया कि वह केवल एक शारीरिक सहयोग नहीं था। उस स्पर्श और सहारे में वरिष्ठ मुनि जी का यह मौन आश्वासन छुपा था कि— **'आप संघ के इस गुरुतर भार से चिंता न करें, पूरी संघ-व्यवस्था में हम आपके साथ हैं, मगन आपके साथ है।'**

सेवा देना ही नहीं, सेवा लेना भी है एक कला!..

1. सेवा ग्रहण करना: एक महान कला और जीवन-कौशल: आचार्यश्री ने फरमाया कि जिस प्रकार किसी की 'सेवा करना' धर्म है, ठीक उसी प्रकार 'सेवा स्वीकार करना' भी एक बड़ी कला है। जब कोई साधक या सेवाभावी व्यक्ति आपकी सेवा में लगा हो, तो सेवा ग्रहण करने वाले के मन में क्रोध, खीझ या डांट-फटकार के बजाय शांति, कृतज्ञता और प्रमोद-भाव होना चाहिए।

2. संवेदनशीलता और धैर्य का महत्व : आचार्यप्रवर ने सेवा के दौरान व्यावहारिक संवेदनशीलता पर बल देते हुए फरमाया–

1. धैर्य का परिचय : यदि सेवा में कभी कोई छोटी-मोटी देरी या त्रुटि हो जाए, तो उसे उलाहना देने के बजाय धैर्यपूर्वक स्वीकार करना चाहिए।

2. सहानुभूति और प्रोत्साहन: सेवा करने वाले भी इंसान हैं। उन्हें डांटने के स्थान पर सहयोग, स्नेह और प्रोत्साहन देना ही श्रेष्ठ साधक का आचरण है।

3. स्वावलंबन : 'अपना काम स्वयं करने की भावना' : आचार्य श्री ने सेवा केंद्रों और संघ में रहने वाले साधकों को स्वावलंबन का पावन संदेश दिया: जो कार्य व्यक्ति स्वयं कर सकता है—जैसे अपने पात्रों (बर्तनों) की सफाई करना, कपड़े समेटना या अन्य छोटे-मोटे कार्य—उन्हें दूसरों से कराने के बजाय स्वयं करने का प्रयास करना चाहिए। जो शारीरिक रूप से पूर्णतः सक्षम हैं, उन्हें सेवा लेने की अपेक्षा दूसरों की सेवा करने और उनका कार्यभार हल्का करने का भाव रखना चाहिए।

4. उभय-कल्याण: सेवा से कर्म-निर्जरा का मार्ग : आचार्य श्री ने फरमाया कि जब सेवा लेने और देने में विवेक, नम्रता और प्रमोद-भाव का समावेश होता है तो दोनों ही साधकों को कर्म-निर्जरा का अपूर्व लाभ प्राप्त होता है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 अक्टूबर - 01 नवम्बर 2026

पूज्य प्रवर ने आगम के आलोक में उद्घाटित किया सर्वगुण संपन्नता व वीतरागता का मर्म

'सर्वगुण संपन्नता ही दिलाती है शाश्वत मोक्ष' : आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि रमणीय कुमार जी की स्मृति सभा आयोजित

लाडनूँ।
17 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने लाडनूँ प्रवास के दौरान सुधर्मा सभा में आगम के गूढ़ विषयों को अत्यंत सरलता व प्रामाणिकता के साथ उजागर किया। पूज्य प्रवर ने कल के निर्धारित विषय 'सर्वगुण संपन्नता से क्या मिलेगा?' तथा मुख्य विषय 'वीतरागता से क्या मिलेगा?' पर विस्तृत विचार व्यक्त करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को आध्यात्मिक पाथेय प्रदान किया।

सर्वगुण संपन्नता का मर्म और अपुनरावृत्ति (मोक्ष) की प्राप्तिः

१. उम्र की अपेक्षा गुणों का विशिष्ट महत्त्व : आचार्यश्री ने आगम की व्याख्या करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में गुणों का सर्वाधिक महत्त्व होता है। गुण थोड़े भी हो सकते हैं और ज्यादा भी हो सकते हैं। मनुष्य की उम्र का अपना एक महत्त्व हो सकता है, परन्तु उसमें गुण कितने हैं—इसका विशिष्ट और मौलिक महत्त्व है।

२. अनंत ज्ञान, सम्यक्त्व और चारित्र की परिणति : सर्वगुण संपन्नता का लाभ बताते हुए आगम के हवाले से कहा गया कि सर्वगुण संपन्नता से जीव 'अपुनरावृत्ति' को उत्पन्न कर लेता है। सर्वगुण संपन्नता का अर्थ स्पष्ट करते हुए पूज्यश्री ने फरमाया कि जब आत्मा में अनंत ज्ञान, क्षायिक सम्यक्तव और यथाख्यात चारित्र पूरी तरह प्रकट हो जाते हैं, तो उसका अंतिम परिणाम 'अपुनरावृत्ति' यानी मोक्ष के स्थान की प्राप्ति के रूप में सामने आता है।

३. दुःखों से सर्वथा मुक्ति : मोक्ष प्राप्त करने वाला जीव इस संसार के शारीरिक और मानसिक दुःखों का भागी नहीं बनता। पूज्य प्रवर ने उदाहरण देते हुए समझाया कि सिद्ध भगवान के न तो शरीर होता है और न ही मन, इसीलिए उन्हें किसी भी प्रकार का शारीरिक या मानसिक दुःख नहीं स्पर्श कर सकता।

वीतरागता का दार्शनिक स्वरूपः राग का क्षय और द्वेष का शमनः

१. 'वीतरागता' शब्द का गहरा मर्म : आज के निर्धारित विषय 'वीतरागता से क्या मिलेगा?' को व्याख्यायित करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि वीतराग वह होता है, जिसका राग पूर्णतः चला जाता है। यहाँ यह दार्शनिक प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि केवल 'वीतराग' ही क्यों कहा गया, 'वीतद्वेष' क्यों नहीं कहा गया?

२. कषायों के अंत का क्रम : इस प्रश्न का समाधान करते हुए पूज्यश्री ने बताया कि जिस जीव का राग समाप्त हो जाता है, उसका द्वेष पहले ही समाप्त हो चुका होता है। क्रोध, मान, माया—ये सब द्वेष के ही रूप हैं और ये साधना के क्रम में पहले ही क्षीण हो जाते हैं। लोभ को राग का रूप माना गया है और वह सबसे अंत में समाप्त होता है। अतः राग के समाप्त होते ही द्वेष का शमन स्वतः सिद्ध हो जाता है।

साधना में बाधक राग के तीन रूप और वीतरागता के त्रिविध लाभ :

१. तीन बाधक राग : साधना के पथ पर काम राग, स्नेह राग और दृष्टि राग—ये तीनों बाधक बनते हैं। पूज्य प्रवर ने 'दृष्टि राग' के दो पक्षों को स्पष्ट करते हुए कहा कि इसका एक पक्ष है दर्शन संबंधी राग अर्थात् अपने मत का आग्रह या पकड़ कि 'मेरी ही बात सही है'। दूसरा इसका सकारात्मक पक्ष है अपने गुरु के प्रति निष्ठा, श्रद्धा व आस्था का भाव कि 'जो मेरे गुरु कहें, वह मुझे स्वीकार है'। यदि गुरु ने डांट भी दिया, तो उसे पूरी विनय से स्वीकार करना गुरु के प्रति सच्ची निष्ठा है।

२. वीतरागता के तीन प्रत्यक्ष लाभ : आगम के आलोक में आचार्यश्री ने बताया कि वीतरागता से तीन प्रमुख आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होते हैंः स्नेहानुबंधनों का विच्छेदः स्नेहानुबंध व्यक्तियों के प्रति होता है (जैसे पुत्र, भाई या परिजनों के प्रति)। वीतरागता इस स्नेह-पाश को तोड़ देती है।

३. तृष्णानुबंधनों का विच्छेद : तृष्णा विभिन्न पदार्थों और वस्तुओं की लालसा है। वीतरागता तृष्णा के बंधनों को जड़ से समाप्त करती है। इंद्रिय विषयों से विरक्तिः वीतरागता से मनोज्ञ (प्रिय) शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध—इन सभी पंचइंद्रिय विषयों के प्रति पूर्ण विरक्ति उत्पन्न हो जाती है।

मुनि रमणीय कुमार जी की पावन स्मृति सभा और श्रद्धांजलिः

१. सिद्धि तप में प्रयाण : शुक्रवार को प्रातः मुनि रमणीय कुमार जी का सिद्धि तप की साधना के दौरान ही प्रयाण हो गया था। इस संदर्भ में आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्य गुरुदेव की पावन सन्निधि में एक भावपूर्ण 'स्मृति सभा' का आयोजन किया गया।

२. जीवन परिचय और चार लोगस्स का ध्यान : आचार्यश्री ने मुनि रमणीय कुमार जी का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रदान किया और उनकी आत्मा के आध्यात्मिक ऊर्ध्वारोहण के लिए मंगल कामना करते हुए समस्त चतुर्विध धर्मसंघ को 'चार लोगस्स' का ध्यान करवाया।

३. संघीय हस्तियों की भावाभिव्यक्तिः तत्पश्चात् युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी तथा साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने भी मुनि श्री की आत्मा के कल्याण की कामना की। उनकी संसारपक्षीय पुत्री साध्वी प्रणव प्रभा जी, गृहस्थ पुत्री पूर्वा, मुनि कमल कुमार जी तथा छापर समाज की ओर से मनोज नाहटा ने अपने श्रद्धापुष्प अर्पित किए। मुनि विजय कुमार जी ने अन्य संतों के साथ भावपूर्ण गीत का संगान कर मुनि श्री को श्रद्धांजलि दी।



राजा, मंत्री और मिट्टी का कलशः रूप बड़ा या गुण?

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरक दृष्टांत से उजागर किया बाहरी दिखावे और आंतरिक श्रेष्ठता का मर्म–

1. प्रसंग : जब सोने के कलश पर भारी पड़ी मिट्टी की मटकी राजा और मंत्री का शास्त्रार्थ : एक बार राजा और मंत्री के बीच गहरा संवाद छिड़ा कि जीवन में 'रूप' (दिखावे) का अधिक महत्व है या 'गुण' का? राजा रूप को प्रधान मानते थे, जबकि मंत्री गुण की महत्ता पर अडिग थे।

2. गर्मी का अनूठा प्रयोग: भीषण गर्मी में जब राजा को तीव्र प्यास लगी, तो मंत्री ने पहले सोने के सुंदर कलश से पानी मंगवाया। राजा ने जल पिया, पर तृप्ति नहीं मिली। तत्पश्चात, मंत्री ने साधारण कोरी मिट्टी की मटकी का जल प्रस्तुत किया, जिसे राजा ने बड़े चाव और असीम तृप्ति के साथ पिया।

3. राजा को मिली सीख : मंत्री ने राजा को बोध कराया कि यदि केवल रूप ही श्रेष्ठ होता, तो सोने का कलश विजयी होता; किंतु राजा ने गुणकारी (शीतल व मधुर) जल के कारण साधारण मिट्टी की मटकी को चुना।

4. पावन संदेश : गुणों से ही जीवन में आती है श्रेष्ठता : पूज्य आचार्य श्री ने फरमाया कि बाहरी दिखावे की तुलना में योग्यता, गुणवत्ता और आंतरिक पवित्रता का मूल्य कहीं अधिक है। व्यक्ति को केवल बाहरी रंग-रूप से नहीं, बल्कि उसके सद्गुणों के आधार पर आंकना चाहिए।

> जिसका राग समाप्त हो जाता है, उसका द्वेष स्वतः समाप्त हो जाता है; वीतरागता ही साधक को मोक्ष की ओर ले जाती है
>
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

'बाप की तलाई' या गुरु का पन्ना? जानिए पूज्य प्रवर से दृष्टि राग का सच!

पूज्य प्रवर ने रोचक प्रसंगों से समझाया दुराग्रह और सच्ची श्रद्धा का अंतर: पूज्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि— अज्ञानता में गलत को पकड़े रखना 'दुराग्रह' है, जबकि गुरु के प्रति अटूट समर्पण ही 'सच्ची निष्ठा' है!

प्रसंग 1 : 'बाप की तलाई' और दुराग्रह का भ्रम

1. गंदे पानी का हठ : एक युवक रास्ते में पड़ने वाली एक अत्यंत गंदी और कीचड़युक्त तलाई (तालाब) का पानी पी रहा था।

2. राहगीर की सीख को अनसुना करना : एक सजग राहगीर ने उसे टोकते हुए कहा कि आगे बहुत सुंदर और स्वच्छ जल का तालाब है, वहाँ जाकर जल पियो। इस पर युवक ने अहंकार और दुराग्रह में कहा— 'यह तलाई मेरे बाप की है, मैं तो इसी का पानी पीऊंगा!'

3. दृष्टि राग का संदेश : आचार्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि यही 'दृष्टि राग' है। व्यक्ति वस्तु की गुणवत्ता और सत्य को भूलकर केवल अपनी पुरानी मान्यताओं और 'अपनेपन' के अंधे भ्रम में गलत रास्ते को पकड़े रहता है।

प्रसंग 2: गुरु के हाथ का पन्ना और अटूट निष्ठा:

1. अक्षरों से परे भाव का मूल्य: आचार्य श्री ने इसी संदर्भ में शिष्य की निष्ठा का अनूठा उदाहरण दिया। यदि गुरु अपने श्रीहस्त से कोई पत्र या पन्ना लिखकर दें, तो उसका मूल्य किसी अन्य व्यक्ति द्वारा लिखे गए अत्यंत सुंदर अक्षरों वाले पत्र से भी कहीं अधिक होता है।

2. श्रद्धा की अमूल्य निधि : भले ही गुरुदेव की लिखावट साधारण या अस्पष्ट हो, पर शिष्य के लिए वह मात्र कागज़ का टुकड़ा नहीं, बल्कि अमूल्य संपत्ति होती है।

पावन सीख : विवेक से त्यागें दुराग्रह, भाव से जगाएं निष्ठा : पूज्य आचार्य श्री ने इन दो प्रसंगों के माध्यम से जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर किया:

1. नकारात्मक पक्ष (दुराग्रह): गलत को भी केवल 'अपना' मानकर पकड़े रहना और सत्य को स्वीकार न करना 'दृष्टि राग' या अंध-हठ है।

2. सकारात्मक पक्ष (सच्ची निष्ठा): बाहरी सुंदरता या दिखावे से परे, गुरु और धर्म के प्रति समर्पित भाव ही जीवन को श्रेष्ठ बनाता है।

मुनिश्री रमणीय कुमार जी को श्रद्धांजलि: संयम, तप और समर्पण की अनूठी गाथा

युवाचार्य श्री महावीरकुमार जी, साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी और साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी के पावन श्रद्धा-सुमन–

1. युवाचार्य श्री महावीर जी के भाव: 'तपस्या करते हुए ही प्राप्त किया कालधर्म':

संयम का मार्ग: उत्तरार्ध जीवन में भी संयम और साधु जीवन को अंगीकार करने वाले भवसागर से पार होने में समर्थ होते हैं।

ऐतिहासिक दीक्षा : मुनि श्री उन 43 संतों-साध्वियों में से एक थे, जिन्हें आचार्य श्री महाश्रमण जी ने बिदासर में दीक्षा प्रदान की थी।

तपस्या और निर्जरा: उन्होंने एकांतर तप, उपवास और सिद्धि तप के सोपान तय किए। शारीरिक कष्टों के बीच भी उनका ध्येय आत्म-शुद्धि रहा और गुरुदेव का मंगल पाठ सुनकर सांत्वना पाते हुए वे तपस्यारत रहते हुए ही कालधर्म को प्राप्त हुए।

2. साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के भाव : 'पिता-पुत्री का संयम पथ और अद्भुत पूर्वाभास':

स्वस्थ जीवन में धर्म : जब तक शरीर स्वस्थ और इंद्रियां सक्रिय हैं, तभी तक धर्म का आचरण कर लेना चाहिए—मुनि श्री ने इसे चरितार्थ किया।

प्रेरणादायी दीक्षा : अपनी संसार पक्षीय सुपुत्री (साध्वी प्रणवप्रभा जी) से प्रेरणा पाकर पिता-पुत्री दोनों ने एक साथ संयम मार्ग अपनाया।

पूर्वाभास और संकल्प : मुनि श्री को अपनी अंतिम बेला का पूर्वाभास हो गया था। उन्होंने स्पष्ट कर दिया था कि वे केवल कर्मों की निर्जरा और तपस्या पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। उनका यह दृढ़ संकल्प अद्वितीय था।

3. साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी के भाव : 'संघ की शरण और सेवा-तप का समन्वय':

संघ की महत्ता : धर्मसंघ ही साधक के लिए गति, शरण, प्राण और साधना का वास्तविक आधार है, जहाँ पंच महाव्रत धारण कर साधक अपनी मंजिल पाता है।

सेवा और तप का संगम : मुनि श्री ने आचार्य प्रवर के कर-कमलों से दीक्षा लेकर अपना जीवन समर्पित किया। 'सेवा' और 'तप'—दोनों के सुंदर समन्वय से उन्होंने अपने कर्मों की निर्जरा की।

(पूज्य प्रवर ने 'प्रतिरूपता' के आगमिक स्वरूप को किया व्याख्यायित

'अनावश्यक संग्रह और कषायों का त्याग ही है सच्ची प्रतिरूपता' : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य श्री ने फरमाया—प्रतिरूपता से दूर होता है मोह और चिंता का भार

लाडनूं।
14 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अखण्ड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का क्रम निरंतर गतिमान है।

प्रातःकालीन मंगल प्रवचन से पूर्व आचार्यश्री द्वारा निर्धारित मंत्र जप करवाया गया। तत्पश्चात् आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम हेतु निर्धारित विषय 'प्रतिरूपता से क्या मिलेगा?' पर चतुर्विध धर्मसंघ को आगम आधारित पावन देशना प्रदान करते हुए पूज्य प्रवर ने अपने विचार व्यक्त किए।

प्रतिरूपता का आगमिक अर्थ एवं बाह्य व आंतरिक लघुता :

१. प्रतिरूपता का स्वरूप : आचार्यश्री ने फरमाया कि जिनकल्पिक जैसे आचार का पालन करना प्रतिरूपता होती है। प्रतिरूपता का एक अर्थ उपकरणों का त्याग, अधिक उपकरण न रखना अथवा अचेल (कपड़ों का त्याग/अल्पीकरण) रहना भी हो सकता है।

२. बाह्य एवं आंतरिक हल्कापन : शास्त्र में प्रश्न किया गया कि प्रतिरूपता से क्या लाभ होता है? उत्तर में बताया गया कि प्रतिरूपता से जीव 'हल्केपन' को प्राप्त हो जाता है। कपड़ों और उपकरणों का न होना बाह्य रूप की लघुता है, जिससे साधक पर इनका कोई भार नहीं रहता। वहीं, भीतरी/आंतरिक लघुता का वास्तविक रूप—कषायों का अल्पीकरण अथवा त्याग है। राग-द्वेष का त्याग कर समता और शांति में लीन रहना ही सच्चा आंतरिक हल्कापन है।

अप्रमत्त जीवन, परिग्रह सीमा एवं क्षमा का पाथेयः

१. मोह व चिंता से मुक्तिः आचार्य प्रवर ने फरमाया कि उपकरणों का अभाव या अल्पीकरण रहने से जीवन अप्रमत्त रहता है। वस्त्रों या उपकरणों के न रहने से उनके प्रति कोई मोह नहीं रहता और न ही उनकी सार-संभाल या सुरक्षा की कोई चिंता रहती है। सीमित वस्त्र और उपकरण रखने वाला साधु विहार के दौरान भी स्वयं को अत्यंत हल्का महसूस करता है। आवश्यकतानुसार सीमित उपकरण रखे जा सकते हैं, परंतु अनावश्यक संग्रह से बचना चाहिए।

२. कषाय अल्पता व गृहस्थ जीवन में व्यवहार : उपकरणों की अल्पता के साथ-साथ कषायों की भी अल्पता रहे, तो यह अति श्रेष्ठ है। क्रोध से मुक्त रहना, शांति व समता में रहना भी प्रतिरूपता का ही एक रूप है।

यही सिद्धांत गृहस्थों पर भी लागू होता है कि उनके जीवन में भी हल्कापन रहे और आवेश या प्रतिकूल स्थिति में भी भीतर शांति और क्षमा का भाव बना रहे।

३. अहिंसा व सर्वजीवों का विश्वास : शास्त्र में कहा गया है कि प्रतिरूपता और समिति से परिपूर्ण साधु समस्त प्राणों, भूतों, जीवों और सत्त्वों के लिए पूर्णतः विश्वसनीय बन जाता है कि 'यह साधु है, यह हमें दुःख नहीं देगा, हिंसा नहीं करेगा।' अतः हमें जीवन में उपकरणों तथा कषायों की अल्पता का निरंतर प्रयास करना चाहिए।

सघन साधना शिविर व जिज्ञासा समाधान : मंगल प्रवचन के उपरांत पूज्य आचार्यश्री ने सघन साधना शिविर के शिविरार्थियों को अपनी-अपनी आध्यात्मिक एवं साधनात्मक जिज्ञासाएँ प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। आचार्यश्री ने प्राप्त जिज्ञासाओं का अत्यंत सरल और प्रामाणिक समाधान प्रदान कर शिविरार्थियों का मार्ग प्रशस्त किया।



'थांरो जाप जप्यां करमां री कोड़ खपसी'... आतापना, काया-क्लेश और कर्म-निर्जरा की पावन गाथा!

1. कायिक क्लेश और तप की पराकाष्ठा: आचार्यश्री महाश्रमण जी ने साधु जीवन के कठोर अनुशासन और सहनशीलता का मार्मिक वर्णन करते हुए फरमाया कि एक सच्चा साधक विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग रहता है। साधुजन कड़ाके की सर्दी में भी सीमित साधनों के साथ, केवल एक 'पछेवड़ी' (चादर) में रहकर अपनी कठोर तपस्या और साधना को निरंतर जारी रखते हैं।

2. आतापना : तपस्या का शिखर : आचार्यप्रवर ने जैन आगमों में वर्णित 'आतापना' साधना का विशेष उल्लेख किया। आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि साधक भीषण गर्मी और कड़ी धूप में सूर्य के सम्मुख खड़े होकर या तपती सिलपट्टी (पत्थर की पट्टी) पर सहनशीलता के साथ लेटकर काया-क्लेश की अप्रतिम साधना करते हैं।

3. ऐतिहासिक उदाहरण : तपस्वी मुनि सुखलाल जी स्वामी इस कठिन तप-साधना को जीवंत रूप में समझाने के लिए पूज्य आचार्य श्री ने सरदारशहर स्थित 'गधैया जी के नोरे' का ऐतिहासिक प्रसंग की बात रखी। पूज्य प्रवर ने घोर तपस्वी सुखलाल जी स्वामी का उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार अतीत के महान साधकों ने तपस्या के इस पथ पर अडिग रहकर साधना के नए कीर्तिमान स्थापित किए।

'घोर तपसी हो मुनि! घोर तपसी थांरो जाप जप्यां करमां री कोड़ खपसी, हो मुनि!'

4. तपस्या का वास्तविक उद्देश्य : कर्म-क्षय और कषाय-मुक्ति : आचार्य श्री ने गहरा तात्त्विक मर्म प्रकट करते हुए फरमाया कि ये बाह्य शारीरिक क्लेश केवल साधना के माध्यम हैं। तपस्या का वास्तविक उद्देश्य शरीर को कष्ट देना नहीं, बल्कि आत्मा के भीतर व्याप्त कषायों (क्रोध, मान, माया, लोभ) को मंद करना और कर्मों की निर्जरा करना है।

> सामान का बोझ कम होना बाह्य बात है; प्रतिकूलता और आवेश की स्थिति में भी भीतर क्षमा और समता बनाए रखना भी प्रतिरुपता है
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

हाथ में माला, मन में वैराग्य... भाद्र शुक्ल छठ का वो ऐतिहासिक दिन...
(आचार्यप्रवर के वैराग्य-संकल्प की पावन गाथ)

'गृहस्थी के दुखों का अंत अनिश्चित है, जबकि संयम का मार्ग 15 जन्मों के भीतर मुक्ति के द्वार खोल देता है। यही वह अकाट्य निर्णय था जिसने मेरे जीवन की दिशा बदल दी।'

— आचार्यश्री महाश्रमण

1. पूर्वजन्मों के संस्कार और वैराग्य की पृष्ठभूमि : आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने वैराग्य के मर्म को साझा करते हुए फरमाया कि जीवन में वैराग्य की भावना का उदय केवल तात्कालिक परिस्थितियों का परिणाम नहीं होता। इसके मूल में अनंत काल के पूर्वजन्मों के सुसंस्कार और साधना की पृष्ठभूमि गहरी जुड़ी होती है, जो उचित समय आने पर अंकुरित हो जाती है।

2. दो रास्तों का गहन चिंतन और तुलनात्मक आकलन : संयम पथ पर कदम रखने से पूर्व, आचार्यश्री ने एकांत में बैठकर जीवन के दो प्रमुख मार्गों—गृहस्थ जीवन और साधु जीवन—पर अत्यंत सूक्ष्म और तार्किक विचार किया था:

1. कठिनाइयों का यथार्थ मूल्यांकन: उन्होंने महसूस किया कि संसार में रहने पर आर्थिक तंगी और पारिवारिक उलझनें हैं; वहीं दूसरी ओर, साधु जीवन में भी कठोर तपस्या, निरंतर पैदल विहार, केश-लुंचन और कठिन नियमों के अपने शारीरिक कष्ट हैं।

2. तुलनात्मक लाभ-हानि: दोनों पक्षों के नफा-नुकसान को तौलते हुए उन्होंने इस बात का गहराई से विश्लेषण किया कि किस मार्ग में आत्मा का वास्तविक कल्याण निहित है।

3. मोक्ष का मार्ग और निर्णय का आधार: इस वैचारिक मंथन के दौरान आचार्यश्री के मन में एक अत्यंत स्पष्ट और दूरदर्शी निष्कर्ष उभरा।

1. गृहस्थ जीवन की अनिश्चितता : इस मार्ग में दुखों का कोई अंत निश्चित नहीं है और कर्मों के बंधनों के कारण अगले जन्मों की गति भी पूरी तरह अज्ञात रहती है।

2. संयम मार्ग की निश्चितता : इसके विपरीत, जैन दर्शन के अनुसार साधु मार्ग को पूरी निष्ठा से अपनाकर जीव अधिकतम 15 जन्मों के भीतर मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त कर सकता है। इसी महान सत्य ने उनके मन में वैराग्य के बीज को पूर्ण संकल्प में बदल दिया।

4. भाद्र शुक्ल छठः संकल्प की सिद्धि और दीक्षा का क्षण : इसी आंतरिक वैचारिक मंथन और दृढ़ निश्चय के बाद, उन्होंने संयम के मार्ग को ही सर्वोपरि मान लिया।

युगपुरुष आचार्यश्री कालूगणी के पावन स्मरण दिवस—भाद्र शुक्ल छठ के पवित्र दिन, उन्होंने साधना की माला फेरते हुए अपने संकल्प को अटूट बनाया और सदा के लिए संयम पथ को स्वीकार कर लिया।

मूर्ति पूजा क्यों नहीं?... जानिए तेरापंथ परंपरा में गुण-वंदना का रहस्य!

वंदना का वास्तविक आधार आत्मा में प्रकट 'वितरागता' और आत्मिक गुण हैं। जहाँ सम्यक ज्ञान, दर्शन और चारित्र का प्रत्यक्ष वास हो, वही पूजनीय है।

1. दो प्रमुख धाराएँ और तेरापंथ का दृष्टिकोण : आचार्यश्री महाश्रमण जी ने दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट फरमाया कि धर्म-साधना की मुख्य रुप से दो वैचारिक धाराएँ विद्यमान हैं—एक वह जो प्रतीक व मूर्ति पूजा को मानती है, और दूसरी वह जो अमूर्त-साधना को स्वीकार करती है। जैन धर्म की तेरापंथ और स्थानकवासी परंपराएँ मूर्ति पूजा को नहीं मानती हैं तथा निराकार गुण-उपासना को ही मुख्य आधार मानती हैं।

2. व्यापक परिप्रेक्ष्यः विश्व-संस्कृति में अमूर्त-उपासना : आचार्य प्रवर ने उदाहरण प्रस्तुत करते हुए समझाया कि मूर्ति पूजा का न होना केवल जैन धर्म की कुछ शाखाओं तक ही सीमित नहीं है। विश्व की अन्य अनेक धार्मिक परंपराओं में भी यही दृष्टि देखने को मिलती है: इस्लाम धर्म, रामस्नेही संप्रदाय इत्यादि.. इस व्यापक परिप्रेक्ष्य के माध्यम से आचार्य श्री ने यह दर्शाया कि अमूर्त-उपासना का अपना एक स्वतंत्र, प्राचीन और सर्वमान्य दार्शनिक आधार है।

3. पूजा और वंदना का वास्तविक आधारः 'द्रव्य नहीं, गुण' : आचार्य श्री ने गहरा तात्त्विक तर्क प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि किसी भी वंदना या पूजा का वास्तविक अधिकार केवल गुणों का है: –क्या मूर्ति में आत्मिक गुण हैं? आचार्य श्री ने प्रश्न किया कि क्या किसी पाषाण या धातु की प्रतिमा में सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन या सम्यक चारित्र जैसे चेतन गुण विद्यमान हो सकते हैं?

वितरागता ही पूजनीय : जैन दर्शन के अनुसार वंदना उसी की होनी चाहिए जो सर्वथा वितरागी हो और जिसके भीतर आत्मिक गुण पूर्ण रुप से प्रकट हो चुके हों। निष्कर्षः चूँकि मूर्ति में चेतना और ये मूलभूत आत्म-गुण नहीं होते, इसीलिए तेरापंथ परंपरा में मूर्ति पूजा को आवश्यक नहीं माना जाता।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 अक्टूबर - 01 नवम्बर 2026

आध्यात्मिक ऊर्जा और संकल्पों के साथ नवाह्निक अनुष्ठान का आगाज

विलेपार्ले।

गोयल भवन के प्रांगण में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के विदुषी सुशिष्या साध्वी राकेश कुमारी जी, साध्वी मलयविभा जी, साध्वी विपुलयशा जी एवं साध्वी चेतस्वीप्रभा जी के पावन सान्निध्य में नवरात्रि के प्रथम दिवस से नवाह्निक अनुष्ठान का शुभारंभ हुआ। सभी साध्वीजी एवं उपस्थित श्रद्धालुओं ने विधिवत अनुष्ठान का क्रम संपन्न किया। इसके पश्चात साधक डॉ. दिलीप सरावगी के मुख्य वक्तृत्व में नवग्रहों पर एक विशेष कार्यशाला आयोजित हुई। डॉ.दिलीप सरावगी ने अत्यंत रोचक एवं सरल उदाहरणों के माध्यम से नवग्रहों तथा उनसे संबंधित प्रभावों को समझाया। उन्होंने संसद एवं कैबिनेट का उदाहरण देते हुए ग्रहों की भूमिका को सहज रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने नौ ग्रहों का तीर्थंकरों, शरीर के विभिन्न अंगों तथा पारिवारिक संबंधों से जुड़े संदर्भों के माध्यम से विश्लेषण किया। सूर्य का पिता से संबंध जैसे उदाहरणों द्वारा उन्होंने विषय को रोचक बनाया। साथ ही, नवग्रहों और नमस्कार महामंत्र के बीच के संबंध को स्पष्ट करते हुए बताया कि नमस्कार महामंत्र के जाप एवं मंत्र-साधना के माध्यम से ग्रहों से संबंधित दोषों के निवारण की भावना रखी जा सकती है। उन्होंने मंत्रों की प्रभावशीलता में शुद्ध उच्चारण, निर्मल भाव, वस्त्रों की शुद्धता तथा साधना-स्थल की पवित्रता के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यशाला के अंत में उन्होंने उपस्थित लोगों की जिज्ञासाओं का समाधान करने का भी प्रयास किया। इस अवसर पर साध्वी राकेश कुमारी जी ने अपने मंगल उद्बोधन में बताया कि जैन धर्म में मंत्रों का विशेष महत्व है और मंत्र परंपरा आगम सम्मत है। नमस्कार महामंत्र की महिमा बताते हुए उन्होंने कहा कि इसमें चौदह पूर्वों का ज्ञान समाहित है। कर्मों के आवरण आत्मा के मूल लक्ष्य तक पहुँचने में बाधक बनते हैं, इसलिए साधना एवं आराधना के माध्यम से इन आवरणों को दूर करने का प्रयास करना आवश्यक है। मंत्र-साधना से आत्मा की पवित्रता बढ़ती है, लेकिन इसके लिए शुद्ध भाव, श्रद्धा और समर्पण अनिवार्य हैं। उन्होंने प्रेरणा दी कि मंत्रों की उपासना साधक के जीवन में एक सुरक्षा-कवच के समान बन सकती है। साध्वीजी ने सभी को नवाह्निक अनुष्ठान में नियमित रूप से सहभागी बनकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में दीपक डागलिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। साध्वीजी के मंगल पाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ।

नवग्रहों के प्रभाव एवं मंत्र-साधना के महत्व पर विशेष कार्यशाला

शक्ति संचय और भाव शुद्धि का पावन पर्व

चेम्बूर।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी निर्वाणश्री जी के पावन सान्निध्य में नवरात्रि अनुष्ठान उल्लास एवं भक्तिमय वातावरण में शुभारंभ हुआ। उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए विदुषी साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा - नवरात्रि का समय शक्ति संचय का समय है। इसमें अनुष्ठान विशेष लाभदायी हो सकता है। जप करनेवालों को कई दृष्टियों से विचार करना जरूरी है। मुख्यतः द्रव्य-शुद्धि, स्थान शुद्धि, समय शुद्धि व भाव शुद्धि पर ध्यान देना अपेक्षित है।

इन चारों में भी भावशुद्धि ज्यादा महत्वपूर्ण है। भक्तामर हमारे जैन धर्म का प्रभावशाली स्तोत्र है। डा. साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने अपने विशेष वक्तव्य में भक्तामर अनुष्ठान की महत्ता बताते हुए उसकी विधि एवं अन्य महत्वपूर्ण तथ्य प्रकट किए। मंत्र को चैतन्य कैसे करे, भक्तामर की रचना कब और कैसे हुई, इस शक्तिशाली स्तोत्र के मुख्य लाभ क्या हैं आदि बिंदुओं पर उन्होंने ओजस्वी वाणी में उद्गार प्रकट किए। साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी एवं साध्वी मधुरप्रभा जी ने सस्वर मंत्रोच्चार करते हुए स्तोत्रपाठ किया। उपस्थित जनसमूह ने भी केन्द्र द्वारा निर्धारित अनुष्ठान व भक्तामर पाठ में जुड़कर विशेष आनंद का अनुभव किया। श्वेत परिधान में बंधुओं एवं लाल चुंदड़ी में महिलाओं के विशाल उपस्थिति में अनुष्ठान की विशेषता जाहिर की।

नवरात्रि अनुष्ठान का भव्य और भक्तिमय शुभारंभ

61 दिनों की कठिन तपस्या से रचा इतिहास, तपस्वी का हुआ भव्य सम्मान

गंगाशहर।

तेरांपथ भवन में 61 दिनों की तपस्या करने वाले विनोद आंचलिया का तेरापंथ सभा गंगाशहर द्वारा तप अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रिया पारख ने मंगलाचरण करके की।

तपोभिनन्दन के अवसर पर सभा को सम्बोधित करते हुए साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा हमारे विज्ञ पुरूषों ने चार प्रकार की अग्नि बताई है - 1. जो स्वयं को जलाती है दूसरों को भी जलाती-क्रोधाग्नि 2. जो स्वयं को नहीं जलाती दूसरों को जलाती है - कटुवचन की अग्नि 3. जो स्वयं को ही जलाती है दूसरों को नहीं - इष्याअग्नि 4. इन सबसे परे एक ऐसी अग्नि है तो न स्वयं को जलाती न पर को वह है तपस्या रूपी अग्नि। वह जलती है हमारे कर्मरोग और कर्मशरीर को और तपस्या का उद्देश्य भी यही है। 'तापयति अष्टविह कम्मगंधि इति तप' इसलिए ज्ञानी से तपस्वी का अधिक महत्व है। ज्ञान में विवाद हो सकता है लेकिन तप में नहीं हो सकता है। साध्वीजी ने कहा आज के इस भौतिकता वादी युग में जहां सुबह से शाम तक कितने - कितने आइटम डाइंनिग टेबल पर आते है वहां 61 दिन रसेन्द्रिय का संयमकर केवल जल के आधार पर बड़ा कठिन कार्य है लेकिन जिनके अन्तरायकर्म का क्षयोपशम होता है वही तपस्या के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है कायर कमजोर इंसान के लिए तो एक दिन भी भूखा रहना कठिन है जो शूरवीर होते है वही तप के समरांगण में आगे बढ़ सकते है।

तप एक रॉकेट है जो हमें सिद्धी सदन तक पहुंचा सकता है। शासनश्री प्रभाश्री जी ने कहां जिनशासन में तप का बड़ा महत्व है। तप से ही जिनशासन चिरंजीवी बनता है। अनेकोनेक तपस्वियों ने तप करके भिक्षुशासन की नीवों को गहरा बनाया है। तपस्वी भाई विनोद की तप अनुमोदना करते हुए साध्वी रश्मि प्रभा जी ने बहुत ही सुन्दर गीतिका का संगान किया।

साध्वी प्रमुखा जी द्वारा प्राप्त संदेश का वाचन तेरांपथ सभा के अध्यक्ष नवरतन बोथरा ने किया। सभा के मंत्री जतन संचेती ने सम्पूर्ण समाज की और से तपस्वी भाई का तपोभिनन्दन किया।

युवक परिषद् क अध्यक्ष देवेन्द्र डागा ने अपनी मंगलभावनाएं प्रेसित की। महिला मण्डल की और से 61 दिन कि तपस्या के उपलक्ष्य में 61 बहनों द्वारा गीत की प्रस्तुति ने पूरे परिसर में शमा बांध दिया। आंचलिया परिवार के भाई - बहिनों ने तप की खूब खूब अनुमोदना की। तेरापंथी सभा गंगाशहर द्वारा तपस्वी भाई का अभिनन्दन पत्र व साहित्य देकर सम्मान किया गया।

तपस्या रूपी अग्नि से कर्मों का क्षय और निर्जरा

पुरुषार्थ से भाग्य का निर्माण और बौद्धिक विकास

कटक।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, कटक के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल कटक द्वारा 'Tryst with Destiny'; अंकों के संग , भाग्य के रंग' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुनि जयेशकुमार जी कहा कि इस प्रतियोगिता का अर्थ है भाग्य के साथ पुरुषार्थ।जहां पुरुषार्थ नही होता वहाँ भाग्य भी सो जाता है।यह उपक्रम सभी को भाग्य के भरोसे ना बैठकर सत्पुरुषार्थ करने हेतु प्रेरित करता है।

कटक किशोर मंडल का यह प्रयास सभी के ज्ञान चेतना के विकास में योगभूत बनेगा। प्रतिभागियों को 90 प्रश्नोत्तरों की प्रश्नावली पूर्व में दी गयी । सभी उत्तर अंकों में थे। पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से प्रश्न पूछे गए।एवं उनके उत्तरों के आधार पर सम्पूर्ण अंक पत्र भरने वाले पांच विजेताओं के साथ सबसे पहले प्रथम द्वितीय और तृतीय पंक्ति व चारों कोण भरने वालों को भी पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम के प्रायोजक चैनरूप चोरड़िया ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया। तत्पश्चात किशोर मंडल की ओर से उनका सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में सह प्रभारी हर्ष चोपड़ा ,अर्पित चोरड़िया सहित अनेक किशोरों का विशेष योगदान रहा।

किशोरों के लिए अभिनव प्रतियोगिता का सफल आयोजन

सिरियारी में भिक्षु हेम ग्रंथागार का उद्घाटन

सिरियारी।

आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी में धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण के बीच भिक्षु हेम ग्रंथागार का उद्घाटन किया गया। आचार्य महाश्रमण के आज्ञानुवर्ती शासनश्री मुनि सुरेशकुमार 'हरनावां', शासनश्री मुनि मुनिव्रत स्वामी तथा सुशिष्य मुनि जितेन्द्रकुमार आदि ठाणा-7 के पावन सानिध्य में संस्थान अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल एवं जेठीदेवी ने विधिवत रूप से ग्रंथागार का उद्घाटन किया। इस अवसर पर आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान में श्रद्धा एवं उत्साह का माहौल रहा। संतवृंद के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के स्टाफगण सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। सभी ने इस पहल को धार्मिक साहित्य के संरक्षण एवं अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना। धार्मिक ज्ञान और साहित्य के संरक्षण की दिशा में कदम भिक्षु हेम ग्रंथागार की स्थापना को आचार्य श्री भिक्षु की आध्यात्मिक परंपरा, जैन दर्शन तथा धार्मिक साहित्य के अध्ययन से जोड़कर देखा जा रहा है। ग्रंथागार के माध्यम से धार्मिक ग्रंथों के संग्रह, संरक्षण और अध्ययन को प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद है। ऐसे ग्रंथागार नई पीढ़ी को धर्म, दर्शन और आध्यात्मिक विचारधारा से परिचित कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

जीवन में संयम, साधना और सीमांकन का बढ़ा महत्व

जयपुर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर के द्वारा भिक्षु साधना केन्द्र, श्याम नगर, जयपुर में मुनि सुधाकर जी एवं सहवर्ती मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं और परिषद् के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मुनिजी ने अपने प्रेरणादायी प्रवचनों में संयम, साधना और सीमांकन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उपस्थितजनों को जीवन में व्रतों के आचरण और अनुशासन से जुड़ने की प्रेरणा दी। तेयुप जयपुर के अध्यक्ष प्रवीण जैन ने बताया कि कार्यक्रम के प्रायोजक बाबूलाल चंद्रकांत बोथरा रहे, तथा आयोजन को सफल बनाने में संयोजक गौतम बरड़िया का उल्लेखनीय योगदान रहा। उपस्थित सभी महानुभावों ने इस कार्यशाला को जीवन को एक नई दिशा देने वाला आध्यात्मिक अनुभव बताया।

मकान की छत की भांति जीवन की रक्षा करते हैं संकल्प

कांदिवली।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद कांदिवली - मलाड द्वारा प्रथम आंचलिक बारहव्रत कार्यशाला का आयोजन आचार्यश्री महाश्रमण जी इस तरह अवश्य लिखे की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' ठाणा 5 के सान्निध्य में हुआ । बारहव्रत कार्यशाला में 'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि 'जैसे छत हमारे मकान की आंधी-तूफान धूप आदि में रक्षा करता है ठीक वैसे ही मनुष्य के जीवन में व्रत /त्याग छत का कार्य करता है। श्रावक की सरल व्याख्या बताते हुए आपने कहा कि श्रा - श्रद्धा, व - विवेक, क - क्रियान्विति । श्रावक बनना है तो हमें सीमांकन करना, संयममय जीवन जीना आवश्यक होगा। साध्वी प्रियंवदा जी ने फ़रमाया 'जैसे डॉक्टर्स के बिना अस्पताल अधूरा है, ठीक वैसे ही त्याग के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। साध्वी जी ने प्रेरणा देते हुए कहा कि बारह व्रत को समझ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में आयोजित बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन

कर कम से कम 7 संकल्प/व्रत स्वीकार करें'। मुख्यवक्ता, प्रवक्ता उपासिका सीमा कोठारी ने उपस्थित श्रावक समाज के 12 ग्रुप्स बना कर, बारहव्रत को बड़े ही सहज एवं सरल तरीके से उपस्थित श्रावक समाज को अवगत करवाया, एक एक व्रत के बारे में सूक्ष्म जानकारियां देकर उपस्थित श्रोताओं का जिज्ञासा समाधान किया एवं उन्हें व्रत स्वीकार करने की प्रेरणा भी दी। इससे पूर्व कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चतुर्थ कमलेश भंसाली ने कार्यक्रम के विधिवत उद्घाटन की घोषणा की एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया एवं बारहव्रत कार्यशाला की जानकारी प्रेषित की। स्वागत वक्ताओं की श्रेणी में तेरापंथी सभा - मुंबई के अध्यक्ष सुरेंद्र कोठारी, तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष मेघराज धाकड़, अभातेममं की महामंत्री रचना हिरण, अभातेयुप के सहमंत्री अंकुर लुनिया आदि ने अपनी बात रखी। अशोक मुथा- महासभा कार्यकारी सदस्य, जगदीश परमार-मंत्री-तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन, मीठालाल धाकड़- सभाध्यक्ष कांदिवली, रतन लोढा- मालाड सभाध्यक्ष, अभातेयुप बारहव्रत के राष्ट्रीय सहप्रभारी नीरज आच्छा, मनीष रांका, समकित पारीख सहित स्थानीय परिषद कांदिवली के अध्यक्ष आशीष श्रीश्रीमाल, मलाड अध्यक्ष सुनील धींग सहित जोगेश्वरी से भायंदर तक की परिषद् के पदाधिकारियों की उपस्थित रही। आभार ज्ञापन विमल धाकड़ ने किया।

आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति और प्रभावशाली वक्तृत्व कला

पंचकूला, हरियाणा।

सात दिवसीय कॉन्फिडेंस पब्लिक स्पिकिंग कोर्ष (CPS)कार्यशाला

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से तेरापंथ युवक परिषद, पंचकूला द्वारा तेरापंथ भवन, पंचकूला में आयोजित 7 दिवसीय CPS – Confident Public Speaking Workshop का सफलतापूर्वक समापन हुआ। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों में आत्मविश्वास, प्रभावशाली वक्तृत्व कला, संवाद कौशल एवं व्यक्तित्व विकास को प्रोत्साहित करना था। सात दिनों तक चले इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को अपनी झिझक दूर करने, विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने तथा मंच पर आत्मविश्वास के साथ बोलने का अवसर प्राप्त हुआ। कार्यशाला में तीन अनुभवी प्रशिक्षकों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। वसुधा जैन– Zonal Trainer, डॉ. रमेश भंसाली– Zonal Trainer, महावीर भटेवरा– National Traine। तीनों प्रशिक्षकों ने अपने विशिष्ट प्रशिक्षण कौशल, व्यावहारिक अभ्यास एवं प्रेरणादायी मार्गदर्शन से प्रतिभागियों के आत्मविश्वास और प्रस्तुति कौशल को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तेरापंथ युवक परिषद, पंचकूला तीनों प्रशिक्षकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है। कार्यशाला के समापन पर आयोजित Graduation Ceremony की अध्यक्षता अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के सहमंत्री-1 पवन नौलखा ने की। उनकी गरिमामयी उपस्थिति एवं प्रेरणादायी मार्गदर्शन ने समारोह की शोभा बढ़ाई। परिषद उनका विशेष आभार व्यक्त करती है। इस आयोजन को सफल बनाने में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, महामंत्री सौरभ पटावरी, CPS के राष्ट्रीय संयोजक दिनेश मरोठी तथा सह-संयोजक सोनू डागा एवं कोमल डागा का मार्गदर्शन, सहयोग एवं प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। तेरापंथ युवक परिषद, पंचकूला इन सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करती है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का विशेष आभार, जिसने इस महत्वपूर्ण आयाम के माध्यम से युवाओं को सीखने, स्वयं को विकसित करने और अपनी प्रतिभा को मंच पर अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया। यह मंच हमारे लिए केवल एक कार्यशाला का आयोजन नहीं, बल्कि युवा व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा। इस कार्यशाला को सफल बनाने में सभी प्रतिभागियों का उत्साह, अनुशासन, नियमित सहभागिता एवं सीखने की ललक सराहनीय रही। तेरापंथ सभा, पंचकूला के प्रति भी विशेष आभार, जिन्होंने इस आयोजन हेतु तेरापंथ भवन उपलब्ध करवाकर हमें सहयोग प्रदान किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में

वक्तृत्व कला में निपुणता और आत्मविश्वास का प्रदर्शन

टॉलीगंज।

कॉन्फिडेंस पब्लिक स्पिकिंग कोर्ष CPS कार्यशाला दीक्षांत समारोह

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद टॉलीगंज द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग (CPS) कोर्स की ग्रेजुएशन सेरेमनी का भव्य आयोजन सिटी हाई कम्यूनिटी हॉल में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अनंत बागरेचा ने की। मुख्य अतिथि समाजसेवी सुनील चोपड़ा की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर राष्ट्रीय CPS प्रभारी सोनू डागा, टॉलीगंज सभा अध्यक्ष सुशील कोठारी, कोलकाता सभा के ट्रस्टी एवं सभा के निवर्तमान अध्यक्ष अशोक पारख तथा राष्ट्रीय CPS ट्रेनर दिनेश बुरड़ विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अनंत बागरेचा द्वारा समारोह के शुभारंभ की उद्घोषणा की गई। विजय गीत का सुमधुर संगान सभा संगठन मंत्री अजय आनंद पुगलीया, परिषद के उपाध्यक्ष सुमित कोठारी, नवीन बैद, मंत्री महावीर जैन एवं विनय सेठिया द्वारा किया गया। मंचासीन अतिथियों ने अपने प्रेरणादायी विचारों से उपस्थितजनों का मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर CPS कोर्स के सभी संभागियों ने प्रशिक्षण के दौरान अर्जित अपने वक्तृत्व कौशल का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न विषयों पर प्रभावी प्रस्तुतियाँ दीं। उनकी आत्मविश्वासपूर्ण प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को प्रभावित किया। कोर्स सफलतापूर्वक पूर्ण करने वाले सभी संभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अतिथियों का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम के अंत में परिषद के मंत्री महावीर जैन ने सभी अतिथियों, प्रशिक्षकों, संभागियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। संयोजक लोकेश जैन, मितेश जैन, यश कोठारी एवं विनय सेठिया के अथक श्रम से सात दिवसीय कार्यशाला संपन्न हुई।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग(CPS) कार्यशाला का दीक्षांत समारोह

केसिंगा।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में CPS अंतर्गत TYP केसिंगा द्वारा दीक्षांत समारोह युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमारजी एवं मुनि हेमंत कुमारजी के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ। सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों के भीतर मंच पर बोलने के भय को दूर करना, आत्मविश्वास विकसित करना तथा प्रभावशाली वक्तृत्व कला के विभिन्न आयामों से परिचित कराना था। कार्यशाला के प्रथम दो दिनों में प्रशिक्षक ऋषभ मंडोत,तीसरे एवं चौथे दिन डिंपल सीयाल ने प्रशिक्षण पर मार्गदर्शन दिया। दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध साहित्यकार तुलसीराम जैन रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता ABTYP के सह संगठन मंत्री द्वितीय महेश परमार ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष रामकुमार जैन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में CPS जोनल ट्रेनर गणेश बम्ब, केसिंगा के शाखा प्रभारी गौतम जैन आदि उपस्थिति रहे। TYP केसिंगा के अध्यक्ष अभिषेक जैन ने CPS कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महेश परमार सहित अन्य अतिथियों ने भी प्रशिक्षण कार्यशाला एवं उसके परिणामों की प्रशंसा की, उन्होंने कहा कि सार्वजनिक वक्तृत्व कला केवल मंच पर बोलने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति निखारने की कला है। मुनि हिमांशु कुमारजी ने कहा कला के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने प्रभावी वक्तव्य के लिए विचारों की स्पष्टता, वाणी की मर्यादा, आत्मविश्वास एवं विषय की समझ को आवश्यक बताया। सभी 34 संभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 अक्टूबर - 01 नवम्बर 2026

मुनि रमणीय कुमारजी के प्रति उद्गार

महाश्रमण गुरु चरण में सुरपुर किया विहार

● मुनि कमलकुमार ●

महाश्रमण गुरु मुखकमल, दीक्षा की स्वीकार
महाश्रमण गुरु चरण में, सुरपुर किया विहार ॥१॥

मुनि श्री विजय कुमारके, सहयोगी सुखकार
समाधिस्थ बनकर रहे, सुन मन हर्ष अपार ॥२॥

वर्षी तप के साथ में, तप भी विविध प्रकार
चौविहार करते सतत, मन में दृढ़ताधार ॥३॥

पिता पुत्री ने साथ में, तजकर के घरबार
बीदासर गुरु चरण में, स्वप्न किया साकार ॥४॥

धर्म पत्नी ने भी किया, संयम अंगीकार
घर के त्रय दीक्षित हुए, सुन विस्मय अनपार ॥५॥

धन्य धन्य सब कह रहे, मुनि रमणीय कुमार
चलते फिरते कर लिया, अपना बेड़ा पार ॥६॥

स्मृति दिवस पर कामना, शीघ्र वरें शिवद्वार
युवाचार्य आचार्य की, सन्निधि जय जयकार ॥७॥

संक्षिप्त खबर

मानवता की सेवा में युवाओं का सराहनीय योगदान

जयपुर। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, जयपुर के द्वारा मानवता की सेवा के लिए रक्तदान शिविर का आयोजन डॉ. बी. लाल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, मालवीय नगर, जयपुर में किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर अपनी सहभागिता दर्ज कराई और कुल 34 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। शिविर के प्रायोजक महेंद्र, निकिता दुगड़ (O.S.R. Fincap Pvt. Ltd. Jaipur) रहा। शिविर के दौरान शासनसेवी डॉ. नरेश मेहता, तेयुप जयपुर के अध्यक्ष प्रवीण जैन, उपाध्यक्ष शरद बरड़िया एवं अनिल दुगड, डॉ. बी लाल इन्स्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, जयपुर की Executive Director & Principal डॉ अपर्णा दत्ता ने स्वेच्छा से रक्तदान करने वाले सभी रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम की कुशल संयोजना के तहत समन्वयक करण नाहटा, संयोजक प्रवीण बोथरा, सिद्धार्थ बरड़िया, रविप्रकाश गोठी, मोहित तातेड़ का उल्लेखनीय श्रम रहा।

मानव सेवा और जीवन रक्षा हेतु पुनीत प्रयास

राजाजीनगर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में आयोजित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा बिन्नी पेटे स्तिथ प्रेस्टिज वेस्ट वुड अपार्टमेंटस में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। संकल्प ब्लड सेन्टर के सहयोग से आयोजित इस शिविर में रक्तदाताओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाते हुए कुल 16 यूनिट रक्तदान किया। शिविर का उद्देश्य समाज में रक्तदान के प्रति जागरूकता का प्रसार करना तथा जरूरतमंद मरीजों के लिए समय पर रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित करना रहा। शिविर के दौरान तेयुप राजाजीनगर से अनिमेष चौधरी, कुनाल गन्ना, भावेश बोथरा एवं चेतन टेबा ने अपनी सक्रिय सेवाएं प्रदान करते हुए रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। शिविर को सुव्यवस्थित आयोजन करने में नेवेल्स ब्रांड ने प्रायोजक के रूप में अपना सहयोग प्रदान किया।

'जीवन्त रहेगी उनकी जीवन गाथा'

● शासनश्री मुनि विजय कुमार ●

किसी कवि ने अपनी कविता में बड़ा सुन्दर लिखा है—'वासन विलाय जात, रह जात वासना' इस पंक्ति के पीछे एक मार्मिक सच छुपा हुआ है। मेरी समझ में कवि का भाव यह है कि व्यक्ति चला जाता है, लेकिन उसके गुण और दोष पीछे रह जाते हैं, वातावरण में सदा जीवित रहते हैं। मुनि रमणीय कुमार जी मेरे साथ दस वर्ष करीब रहे, वे चले गए किन्तु उनके गुणों की भीनी-सौरभ जन-मानस में लम्बे समय तक जीवन्त रहेगी। वे जबरदस्त तपस्वी थे। किसी को खाने-पीने का शौक रहता है किन्तु मुनि रमणीय को तपस्या का शौक रहता था। उनकी तपस्या का लम्बा लेखा है। मेरे पास आये तब से मैंने उनको कोई न कोई तपस्या में लगे देखा।

उन्होंने सम्भवतः सात वर्षीतप कर लिए, कई बार बेले, तेले, चोले-पंचोले और अठाई तक की तपस्या कर ली। एकासन, पोरसी, आयम्बिल, द्रव्यों की सीमा, विगय वर्जन, कण्ठी तप, धर्मचक्र, प्रतरतप, नियमित नवकारसी, दस पच्चखाण इस तरह कोई न कोई तप उनके चलता ही रहता था। ओर सब चौविहार तप करते थे। अभी उनका सिद्धितप चल रहा था। सात दिन की तपस्या थी फिर आठ दिन की करनी थी। इस तपस्या में उनकी शारीरिक शक्ति एकदम क्षीण हो गयी। शरीर हड्डियों का ढांचा मात्र रह गया था। छठे दिन उन्होंने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया, सदा के लिए यहाँ से विदाई ले ली। वे सेवाभावी संत थे। आलस्य उनसे कोसों दूर था। तपस्या में भी वे काम नहीं छोड़ते। उनको मैं कई बार काम में लगे रहते। ज्यादा कहने पर वे नाराज हो जाते, इसलिए मूड देखकर उनको कहना होता। वे एक मनोबली संत थे। बीमारी में भी उनका मनोबल मजबूत रहता था। वे विहार में अक्सर दो-झोलके कंधों पर लेकर चलते थे।

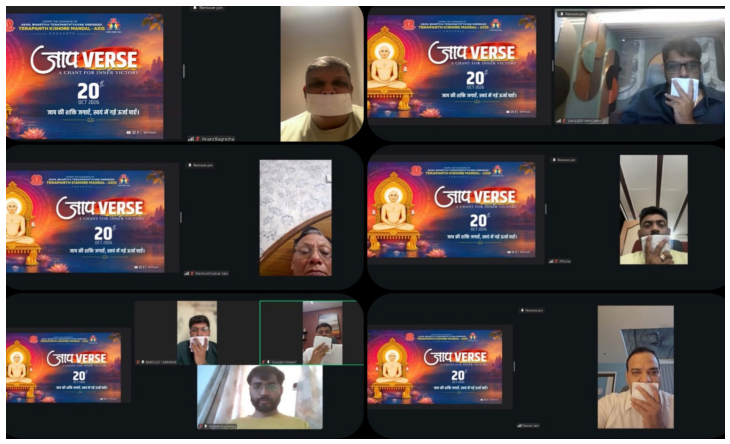
दोनों का वजन १२, १३, किलो हो जाता होगा। मेरे पास एक छोटा सा बैग रहता था। कभी २, उनके गैस की बीमारी हो जाती थी। इस गैस की उपजी की अन्य बीमारियाँ भी कई बार उभर आती थी। मैं इनको ज्यादा से ज्यादा विश्राम के लिए कहता। विहारों में वजन मुझे दे देने का कहता किन्तु ये मुझे नहीं देते। मुख के छोटे-बड़े कामों में भी मुझे बैठने नहीं देते। इनके मनोबल और हिम्मत की कई कहानियाँ मेरे दिमाग में है।

दीक्षा लेते ही आचार्यश्री महाश्रमण जी ने इनको मुझे सौंपा था, फिर करीब 5 वर्ष ये दर्शन कुमार जी और मुनि रणजीत कुमार जी के साथ रहे। उसके बाद ये मेरे पास आ गए। एक दिन भी इन्होंने मुझे नहीं छेडा, न मैंने इनको। योग-क्षेम वर्ष में तपस्या के क्षेत्र में और आगे बढ़ने की भावना थी, किन्तु आयुष्प बल नहीं रहा। १६ अक्टूबर को ही इन्होंने स्वर्ग-प्रस्थान कर दिया और हमारे से सदा-सदा के लिए विदाई ले ली। हम मंगल कामना करते हैं कि उनकी आत्मा उत्तरोत्तर उज्ज्वलता को प्राप्त करें और वे शीघ्र मोक्ष श्री का वरण करें। उनका संयम पर्याय ज्यादा नहीं रहा पर उनके जीवन की कहानी सदा जीवन्त रहेगी। उनके गुणों की गाथा को लोग याद करेंगे।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के मार्गदर्शन में

JAPVERSE – 24 घंटे के अखंड जाप का भव्य आयोजन

ऑनलाइन।



तेरापंथ किशोर मंडल – AXIS द्वारा आयोजित

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन आशीर्वाद से संपन्न हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के मार्गदर्शन में तेरापंथ किशोर मंडल – AXIS द्वारा आयोजित JAPVERSE – A Chant for Inner Victory का 24 घंटे का अखंड जाप 20 अक्टूबर 2026 को प्रातः 6 बजे प्रारंभ हुआ और 21 अक्टूबर 2026 को प्रातः 6 बजे हुआ। यह आध्यात्मिक आयोजन ABTYP के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत की गरिमामयी उपस्थिति में प्रारंभ हुआ। संपूर्ण जाप ABTYP के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमारजी एवं TKM के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि नय कुमारजी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। इस आयोजन की विशेषता रही कि प्रत्येक एक घंटे के अंतराल पर नए किशोर मंडल जाप से जुड़ते रहे, जिससे 24 घंटे तक जाप की निरंतरता और आध्यात्मिक ऊर्जा बनी रही। देशभर के लगभग 60 किशोर मंडलों के 250 किशोरों ने इस अभियान में सहभागिता की। जाप के विभिन्न सत्रों में ABTYP के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, उपाध्यक्ष प्रथम अनंत बागरेचा, उपाध्यक्ष द्वितीय अभिनंदन नाहटा, उपाध्यक्ष तृतीय संदीप हिंगड़, उपाध्यक्ष चतुर्थ कमलेश भंसाली, महामंत्री सौरभ पटावरी एवं संयुक्त मंत्री द्वितीय अंकुर लूनिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। TPF Futura की संयोजिका प्रीति चोरड़िया, जैन विश्व भारती संचालन समिति के सदस्य राजेंद्र खटेड एवं प्रमोद जैन तथा महसभा के पूर्व अध्यक्ष सुरेश गोयल ने भी विभिन्न सत्रों में सहभागिता कर आयोजन की गरिमा बढ़ाई। इस संपूर्ण अभियान के कुशल संचालन में राष्ट्रीय किशोर मंडल प्रभारी मयंक धाकड़, राष्ट्रीय सह-प्रभारी श्रेणिक कुचेरिया एवं बजरंग कुंडलिया का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन एवं योगदान रहा। आयोजन की सफलता में अर्पित मालू, कार्तिक जैन, संयम राय सोनी एवं जैनिल परमार तथा समस्त ब्लू ब्रिगेड टीम की विशेष भूमिका रही। इन सभी साथियों ने योजना, समन्वय एवं संचालन में पूर्ण समर्पण के साथ सक्रिय योगदान दिया। TKM चेन्नई का 24 घंटे तक निरंतर जाप में उपस्थित रहना, जो उनकी निष्ठा, अनुशासन एवं आध्यात्मिक समर्पण का प्रेरणादायी उदाहरण बना।JAPVERSE केवल एक जाप कार्यक्रम नहीं, बल्कि किशोरों को आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ने, सामूहिक साधना की भावना जागृत करने और आत्मविजय की दिशा में प्रेरित करने का एक सार्थक प्रयास रहा।

संक्षिप्त खबर

आराधना एवं गौरवमयी उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण संपन्न

दक्षिण मुंबई। महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी एवं शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी आदि ठाणा-५ के सान्निध्य में मंगलमय नवरात्रि का सुंदर आयोजन संपन्न हुआ। साध्वी कंचनप्रभा जी ने अनुष्ठान करवाने से पूर्व अनुष्ठान की उपलब्धि के बारे में बताया और कहा कि श्रद्धापूर्वक अनुष्ठान करने वालों की मंजिल तय होती है। उन्होंने कहा कि विनम्रता, सादगी एवं संयम से मंत्र, जप और अनुष्ठान फलीभूत होते हैं। सह-शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि नवरात्रि भारत का श्रृंगार है और भारतीय संस्कृति में इसका अत्यंत बड़ा महत्व है। नवरात्रि में देवियों की विशेष महिमा गाई जाती है। मंदिर हो या डांडिया रास, हर स्थान पर देवियों का श्रद्धा के साथ गुणगान और वर्चस्व बढ़ाया जाता है। कार्यक्रम के दौरान घाटकोपर सभा के अध्यक्ष शांतिलाल कोठारी एवं उपाध्यक्ष सुरेश राठौड़ ने नवरात्रि की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।मीडिया प्रभारी नितेश धाकड़ आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मानवीय सेवा और स्वच्छता का संकल्प

दिल्ली। अणुव्रत समिति दिल्ली ट्रस्ट द्वारा निर्मित जन कल्याणकारी जल सेवा का भव्य उद्घाटन कार्यक्रम की मुख्य अतिथि माननीय दिल्ली नगर निगम उपमहापौर व निगम पार्षद, आनंद विहार डॉ मोनिका पंत द्वारा किया गया। अपने अध्यक्ष उद्बोधन में बाबूलाल गोलछा ने आचार्यश्री तुलसी, अणुव्रत आंदोलन एवं अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली द्वारा आयोजित विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी दी। कार्यक्रम का प्रारंभ समिति सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत से हुआ। अणुव्रत अचार संहिता का संकल्प पूर्व अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी ने करवाया। उप महापौर डॉ. मोनिका पंत मोनिका ने अपने वक्तव्य में कहा-संस्था मानवीय एकता, नैतिकता एवं अन्य सामाजिक कार्य कर रही है वह प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा आनंद विहार वार्ड के नगर निगम द्वारा चिन्हित कुछ गार्बेज डंपिंग ग्राउंड जहां स्वच्छता की आवश्यकता है उनमें से एक स्थान यह था । आज जल सेवा का उद्घाटन के साथ ही स्वच्छता अभियान को भी प्रमुखता दी गई है, दिल्ली नगर निगम के साथ जो भी कार्यक्रम संस्था करना चाहेगी मेरा उसमें सहभागिता व सहयोग रहेगा। कार्यक्रम में नमिता जोशी, निदेशक ग्रीनफील्ड पब्लिक स्कूल विवेक विहार, समाज सेवी सुशील कुमार दुगड़, अनु अंशु जैन प्रधान प्रधान विवेक विहार महिला विंग। विभु क्षोत्रिय की गरिमामय उपस्थिति रही। जल सेवा निर्माण में नमिता जोशी एवं सुशील कुमार दुगड का अर्थ सहयोग रहा। अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली पूर्व अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी, सह मंत्री ईश्वर जैन, संगठन मंत्री राजीव महनोत ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम का संचालन बाबूलाल दुगड कार्य समिति सदस्य अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी ने कुशलतापूर्वक किया।

भक्ताम्बर पाठ की सामूहिक साधना का भव्य आयोजन

सैंथिया। नवरात्रि के इन पावन दिनों में आयोजित यह महामनुष्ठान श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण रहा। भक्ताम्बर स्तोत्र के सामूहिक पाठ एवं साधना के माध्यम से उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने तथा अपने जीवन में सकारात्मकता एवं आत्मिक शांति का संचार करने का प्रयास किया। इस महामनुष्ठान में कुल 101 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। सभी प्रतिभागियों ने पूर्ण श्रद्धा, अनुशासन एवं समर्पण के साथ इस आध्यात्मिक आयोजन में भाग लिया। सामूहिक साधना के वातावरण ने पूरे आयोजन को अत्यंत भक्तिमय एवं ऊर्जावान बना दिया। तेरापंथ युवक परिषद, सैंथिया द्वारा आयोजित इस महामनुष्ठान का उद्देश्य समाज में आध्यात्मिक जागरूकता को बढ़ावा देना तथा अधिक से अधिक लोगों को साधना एवं धार्मिक गतिविधियों से जोड़ना रहा। मुनिश्रीजनों के पावन सान्निध्य ने इस आयोजन की आध्यात्मिक गरिमा को और अधिक बढ़ाया। इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों एवं सहयोगकर्ताओं का उत्साह देखते ही बनता था।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

तप संपूर्ति अनुष्ठान

■ **गाँधीनगर-दिल्ली।** गंगाशहर निवासी कृष्णानगर दिल्ली प्रवासी नितीश डागा (तेयुप सक्रिय सदस्य) सुपुत्र अशोक - बसंती डागा के (30 की तपस्या मासखमण का तप संपूर्ति अनुष्ठान संस्कारक प्रकाश सुराणा, हेमराज राखेचा व महेन्द्र कुमार श्यामसुखा ने पुरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **घाटकोपर, मुंबई।** रिछेड़ निवासी भरत कोठारी की धर्मपत्नी सौ. का.डिम्पल कोठारी की मासखमण तप संपूर्ति अनुष्ठान का आयोजन जैन संस्कार विधि से संस्कारक मालचंद भंसाली व दीपक कोठारी ने किया।

■ **सूरत।** सुजानगढ़ निवासी सूरत प्रवासी विजयकांत मंजू खटेड़ की सुपुत्री निधि यश जी सुराणा के 21 की तपस्या का तप अनुष्ठान संपुर्ति संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, सुशील गुलगुलिया,विनीत सामसुखा ने पूर्ण किया।

नवीन प्रतिष्ठान

■ **बरहमपुर।** लाडनूं निवासी बरहमपुर प्रवासी अरविंद, राजीव बोकडिया के नूतन शॉप का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से हुआ,संस्कारक विकाश कुमार चोरड़िया रहे।

■ **पेटलावद।** पारसमल पंकज कुमार मनीष कुमार पटवा के नवीन प्रतिष्ठान MP बुलियन का संस्कारक कमल जैन एवं राजेश वोरा द्वारा नवीन प्रतिष्ठान का शुभारंभ संपन्न करवाया गया।

■ **अमराईवाड़ी-ओढ़व।** उदयलाल नमन चिपड़ परिवार के नवीन प्रतिष्ठान का शुभारंभ संस्कारक दिनेश टूकलिया एवं पंकज डांगी ने विधिवात् मंत्रोच्चार के साथ करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** छत्तर सिंह भंसाली के नूतन गृह का संस्कारकः विजय बरमेचा एवं अजय भंसाली में जैन संस्कार विधि से शुभारंभ करवाया।

■ **इंदौर मेलबोर्न (ऑस्ट्रेलिया)।** प्रतीक कांठेड़ (सुपुत्र प्रकाश कांठेड़) के नवनिर्मित घर का जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश, ऑनलाइन से संस्कारकः विकास छाजेड़ और अजीत जैन उपस्थित रहे।

■ **बालोतरा।** खीमराज सालेचा के सुपुत्र विमल सालेचा के नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम संस्कारक पुष्पराज कोठारी और कमल कुहाड़ ने सम्पूर्ण विधि-विधान द्वारा करवाया।

■ **जयपुर।** अंजू - पंकज जैन के नूतन आवास का जैन संस्कार विधि से गृहप्रवेश संपन्न कराया गया। संस्कारक पवन जैन एवं सौरभ जैन उपस्थित रहे।

■ **कांदिवली पूर्व, मुंबई।** गजपुर निवासी दिनेश मांगीलाल परमार का नूतन गृह प्रवेश संस्कारक पारसमल दुगड़ एवं शांतिलाल कोठारी ने नूतन गृह प्रवेश करवाए।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **साउथ कोलकाता।** वर पक्षः Marvin J. Kothari (मूल निवासः बिलिया, गुजरात) वधु पक्षः Sujata Singh (मूल निवासः बलौर, बिहार; जन्मः कोलकाता)का विवाह संस्कार के रूप में संस्कारक महेंद्र दुगड़ थे।

संस्कार दात्री और जीवन निर्मात्री नारी शक्ति

जयपुर।

तेरापंथ महिला मंडल शहर ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में अणुविभा केन्द्र में मुनि तत्त्व रुचि 'तरुण' एवं मुनि संभव कुमार जी के सान्निध्य में 'या देवी सर्वभुतेषु' और 'मेरी शक्ति की कहानी' कार्यशाला का आयोजन किया। जिसमें मंडल की अनेक बहिनों ने गणवेश में उपस्थित हो कर अपने जीवन की प्रेरक घटना-प्रसंग प्रस्तुत कर सभी को नयी प्रेरणा प्रदान की।

इस अवसर पर मुनि तत्त्व रुचि 'तरुण' ने कार्यशाला को प्रासंगिक और उपयोगी बताते हुए कहा - नारी सबसे न्यारी, सब पर भारी। उस शक्ति स्वरूपा नारी का समूचा जग आभारी। मुनि जी ने कहा - संस्कारी नारी जन्म दात्री ही नहीं, बल्कि जीवन निर्मात्री भी होती है।

शहर मंडल की अध्यक्षा कौशल्या जैन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा - यह कार्यशाला नारी शक्ति की क्षमताओं से समाज को परिचित कराने का सुअवसर है। आज की नारी केवल घर की चार दिवारी तक सिमित नहीं है। बल्कि अपनी शक्तियों से उसने धरती से लेकर आसमां तक नया इतिहास रच दिया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता पुष्पा बैद (पूर्व अध्यक्ष अ. भा. ते. म. मं.) ने की। उन्होंने वक्तव्य के साथ प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा भी की।

प्रेरणादायी संस्मरणों एवं विविध प्रतियोगिताओं का समागम

मेरी शक्ति की कहानी' विषय पर हुयी कहानी प्रतियोगिता में राजरानी जैन प्रथम निधि लोढ़ा ने द्वितीय एवं कृतिका कोचर व वंदना पोखरना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

आर्ट में सुधा सिंघवी ने प्रथम मलिया बरड़िया ने द्वितीय तथा चंचल दुगड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री पायल जैन व पूजा संघवी ने किया। मौके पर डॉ कांता छाजेड़ व मंडल की पदाधिकारी बहिनों ने आगन्तुक अतिथियों को साहित्य भेंट कर सम्मान किया। वीना चौहान, डा. नीना शर्मा कार्यक्रम में प्रतियोगिताओं की निर्णायक थी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 अक्टूबर - 01 नवम्बर 2026

अंतरंग ऊर्जा का जागरण और आध्यात्मिक साधना

कटक।

भक्ति भाव एवं मंत्रोच्चार से ओतप्रोत दिव्य आयोजन

शक्ति जागरण के महापर्व नवरात्रि के अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल,कटक द्वारा जय सिद्ध शक्ति अनुष्ठान का आयोजन मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में हुआ। अनुष्ठानकर्ताओं ने मुनि जयेश कुमार जी के साथ अनेक सिद्ध शक्ति जागरण मंत्रों का समुच्चारण किया। तेरापंथ भवन में अनुष्ठानकर्ताओं को संबोधित करते हुए मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि जप शक्ति जागरण, विघ्नशमन और मनोबल के विकास का साधन है। जप शरीर, मन और विचार तन्त्र को प्रभावित करता है।अनुष्ठान का प्रयोजन आत्म शक्ति का जागरण है। मुनि ने कहा - मंत्र विविध शक्तियों का खजाना है। मनोयोगपूर्वक जाप करने से सारी शक्तियाँ जपकर्ता में धीरे-धीरे प्रकट होने लगती हैं। मुनि जयेश कुमार जी ने कहा भक्ति रस से भरी किसी भी पंक्ति को मंत्र बनाया जा सकता है। उस मंत्र को भावों से भावित कर दिया जाए तो उसकी शक्ति अपरिमित हो जाती है। किताबों और ग्रंथों में हजारों मंत्र लिखे हैं, किंतु उन्हें पढ़कर आप अपना अभीष्ट सिद्ध नहीं कर सकते। विधिपूर्वक, अनुष्ठानपूर्वक लयबद्ध उच्चारण के साथ उसमें भावना का पुट देना पड़ता है, तब कहीं जाकर उस मंत्र में प्राणशक्ति का संचार होता है। प्रकंपन जितना ज्यादा शक्तिशाली होगा, मंत्र उतना ही प्राणवान और कार्यकारी बनेगा। भावना उसे और ज्यादा शक्तिशाली बना देती है। उन्होंने आगे कहा हर साधना को साध्य और आराधना को आराध्य की जरूरत होती है।जब आराध्य के प्रति सच्ची भक्ति का भाव जागृत होता है तो हर अक्षर मंत्र बन जाता है। अनुष्ठान के डिजिटल दिग्दर्शन में कन्या मंडल संयोजिका उर्वशी चोपड़ा का विशेष योगदान रहा।

योग अभ्यास से शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक शांति का संदेश

उधना।

युवाओं में अनुशासन और सकारात्मक जीवनशैली को बढ़ावा देने का प्रयास

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, उधना द्वारा संचालित 'Fit Yuva Hit Yuva' अभियान के अंतर्गत आयोजित योग सत्र का सफल आयोजन तेरापंथ भवन, उधना में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पवित्र नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुआ। मंगलमय वातावरण में आयोजित इस योग सत्र का उद्देश्य युवाओं एवं समाज के सभी वर्गों में शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति और जीवन में अनुशासन के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा। योग सत्र में प्रशिक्षिका नेहा मेहता ने अपनी कुशलता एवं सरल प्रशिक्षण शैली से उपस्थित सभी प्रतिभागियों को विभिन्न योगासनों एवं योगाभ्यासों का अभ्यास करवाया। उन्होंने सहज और प्रभावशाली तरीके से योग के महत्व को समझाते हुए शरीर को स्वस्थ रखने, मन को शांत रखने तथा दैनिक जीवन में योग को अपनाने की प्रेरणा दी। सभी ने पूरे उत्साह एवं एकाग्रता के साथ योग सत्र में सहभागिता की। मनीष कावड़िया (अध्यक्ष, तेरापंथ युवक परिषद, उधना): योग को स्वस्थ एवं संतुलित जीवन का महत्वपूर्ण आधार बताते हुए परिषद द्वारा आयोजित ऐसे स्वास्थ्यवर्धक एवं प्रेरणादायी आयोजनों की महत्ता पर प्रकाश डाला। नेमीचंद पोरवाल (सभा अध्यक्ष): योग के माध्यम से स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने तथा समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करने के प्रयासों की सराहना की। कार्यक्रम के अंत में साध्वी डॉ. परमयशा जी ठाणा-4 के मंगल प्रेरणा एवं मंगल पाठ से कार्यक्रम की मंगलमय संपन्नता हुई। साध्वी जी के प्रेरणादायी मंगल भावों ने उपस्थित सभी लोगों को आध्यात्मिक ऊर्जा एवं सकारात्मक चिंतन की प्रेरणा प्रदान की। 'Fit Yuva Hit Yuva' अभियान के माध्यम से तेरापंथ युवक परिषद, उधना ने स्वस्थ जीवनशैली, योग के प्रति जागरूकता एवं सकारात्मक जीवन दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास किया। तेरापंथ युवक परिषद, उधना सभी गणमान्यजनों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिनके सहयोग एवं सहभागिता से यह आयोजन सफल एवं प्रेरणादायी बना।

सेवा, संस्कार एवं संगठन का मार्ग

मुंबई।

युवा प्रतिनिधियों का भावभीना अभिनंदन और पावन आशीर्वाद

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुंबई की टीम शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी एवं शासनश्री साध्वी मंजूरेखा जी आदि ठाणा-5 के दर्शनार्थ महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल, कालबादेवी पहुँची। इस अवसर पर साध्वीवृंद के दर्शन कर टीम ने आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण मुंबई की टीम द्वारा अभातेयुप के नवमनोनित राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कमलेश भंसाली एवं राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री महेश परमार का दक्षिण मुंबई की धरा पर हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी एवं शासनश्री साध्वी मंजूरेखा जी ने अभातेयुप मुंबई की टीम को आशीर्वाद प्रदान करते हुए सेवा, संस्कार एवं संगठन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने की प्रेरणा दी तथा सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ एवं मंगलकामनाएँ व्यक्त कीं। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष सुमीत सुराणा ने प्रस्तुत किया। जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष देवेंद्र डागलिया ने सभी का स्वागत करते हुए शुभकामनाएँ दीं एवं अपने विचार व्यक्त किए। अभातेयुप के नवमनोनित राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कमलेश भंसाली एवं राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री महेश परमार ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर अभातेयुप की ओर से कमलेश भंसाली, अंकुर लूनिया, महेश परमार सौरभ सुराणा, निर्मल चंडालिया, धीरज मेहता, मनीष रांका तथा हेमंत धाकड़ की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के कार्याध्यक्ष गणपत डागलिया, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष देवेंद्र डागलिया, सहमंत्री राहुल मेहता, प्रचार मंत्री नितेश धाकड़, तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष सुमित सुराणा, सहित तेरापंथ समाज दक्षिण मुंबई के गणमान्य सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण मुंबई के मंत्री श्रेयांस मुनोत ने किया तथा आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष पूरण चपलोत ने प्रस्तुत किया। यह जानकारी तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण मुंबई के पूर्व अध्यक्ष नितेश धाकड़ एवं उपाध्यक्ष दर्शन डागलिया ने दी।

आंतरिक सामर्थ्य और गंभीर चिंतन से जीवन का रूपांतरण

गुवाहाटी।

निर्मलता, प्रकाश और संयम से सुदृढ़ होती है अंतःचेतना

शक्ति जागरण के महापर्व नवरात्रि के पावन अवसर पर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी ठाणा-2 के पावन सानिध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के तत्वावधान में नवाह्निक आध्यात्मिक जप अनुष्ठान का आयोजन किया जा रहा है।

नवरात्रि के दूसरे दिन आध्यात्मिक साधना, मंत्र-जप एवं आत्मशुद्धि की भावना के साथ अनुष्ठान का शुभारंभ हुआ।

इस अवसर पर मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने मुनि विकास कुमार जी को दस दिनों की मौन साधना के साथ भगवान भिक्षु की स्तुति में 'ॐ जय भिक्षु' का सवा लाख जप अनुष्ठान एवं तेरह द्रव्यों के साथ साधना प्रारंभ करने पर वृहद् मंगल पाठ सुनाया।

उन्होंने चंदन की माला, नागपाश यंत्र एवं त्याग रूपी उपहार प्रदान कर मंगल आशीर्वाद दिया। मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने भी नवरात्रि के उपलक्ष्य में दस दिनों तक मौन साधना के साथ 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' का सवा लाख जप अनुष्ठान करने तथा चार द्रव्यों का संकल्प स्वीकार किया। नवाह्निक आध्यात्मिक जप अनुष्ठान का शुभारंभ मुनि जी के महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने कहा कि दुनिया में शक्ति का विशेष महत्त्व है। शक्तिहीन व्यक्ति अपने भीतर रिक्तता अनुभव करता है और कभी-कभी स्वयं को दयनीय एवं असहाय भी महसूस करने लगता है। जीवन में अनेक प्रकार की शक्तियों का अपना-अपना महत्त्व है, लेकिन सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक शक्ति होती है। आध्यात्मिक शक्ति व्यक्ति को आंतरिक सामर्थ्य, आत्मविश्वास, शांति और संयम प्रदान करती है।

यह शक्ति मनुष्य को कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित एवं दृढ़ बने रहने की प्रेरणा देती है। मुनि जी ने बताया कि गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का एक नया उपक्रम प्रारंभ किया था। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी के निर्देशन में यह अनुष्ठान विधिवत् रूप से संचालित हो रहा है। इसका प्रमुख उद्देश्य आत्मशुद्धि, आध्यात्मिक ऊर्जा का विकास एवं साधना के माध्यम से व्यक्ति के भीतर सकारात्मक परिवर्तन लाना है।

आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से प्रारंभ होने वाली यह साधना निर्धारित अवधि तक निरंतर चलती है और साधक को आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। प्रवचन के दौरान मुनि जी ने आर्हत् वाङ्मय के 'उक्कित्तणं' नामक स्तोत्र की व्याख्या करते हुए बताया कि यह स्तोत्र अपने प्रारंभिक पद 'लोगस्स' के कारण जनमानस में 'लोगस्स' के नाम से प्रसिद्ध है।

इसी प्रकार कई बार किसी ग्रंथ या स्तोत्र का मूल नाम पीछे रह जाता है और उसका प्रारंभिक शब्द ही उसकी प्रमुख पहचान बन जाता है। मुनि जी ने 'लोगस्स' स्तोत्र के अंतिम श्लोक में वर्णित तीन विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि तीर्थंकर चंद्रमा से भी अधिक निर्मल, सूर्य से भी अधिक प्रकाशमान तथा सागर से भी अधिक गंभीर होते हैं। इन उपमाओं के माध्यम से निर्मलता, प्रकाश एवं गंभीरता जैसे उत्कृष्ट गुणों की महत्ता को समझाया गया है।

संयम मार्ग पर बढ़ते कदम और वैराग्य का अनुपम अभिनंदन

बालोतरा।।

तेरापंथ सभा बालोतरा के अमृत सभागार के पवित्र प्रांगण में प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी जहान बेताला सूरत का मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। इस समारोह में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए साध्वी मंगल प्रज्ञा जी ने कहा- भगवान महावीर ने कहा है- शूरवीर व्यक्ति ही महापथ को स्वीकार करता है।

दीक्षार्थी जहान ने छोटी उम्र में संयम मार्ग पर चलने का प्रबल संकल्प संजोया है और उसकी यह भावना फलवान बन रही है। यह 'जहान', जहान को छोड़कर सम्पूर्ण जहान को अपना बनाने जा रहा है। इस विशाल चिन्तन, संयम की दिशा में पराक्रम सबके लिए प्रेरणा है। 'तिन्नाणं तारयाणं' का सूत्र लेकर यह प्रस्थान कर रहा है, इसकी भावना फलीभूत बने, यह शुभकामना है। साध्वी मंगल प्रज्ञा जी ने कहा- जहान की गहन वैराग्य भावना को हमने देखा चातुर्मास में हमारी सेवा उपासना में जहान और उसकी माँ नताशा हमारी प्रेरणा से आते रहे, सामायिक, तत्वचर्चा आदि के द्वारा, नताशा परिपक्व बनी, जहान को शुभ योग मिला और वह गुरु चरणों में पहुंच गया, इसकी मुझे बेहद प्रसन्नता है। गुरु चरणों में साधना की, साथ ही अपने पिता द्वारा की गई विविध परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुआ, आज वह दीक्षार्थी के रूप मे मंच पर उपस्थित है। साध्वी जी ने जहान को 'विजयी भव' का आशीर्वाद प्रदान करते हुए गुरु, संघ और अपनी आत्मा के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा दी। साध्वी जी

छोटी उम्र में महापथ को स्वीकार कर आत्म-कल्याण की ओर प्रस्थान

ने कहा-एक मातापिता अपनी संतान को गुरुचरणों में समर्पित करना- एक बहुत बड़ा साहस और आदर्श है। सम्पूर्ण परिषद के लिए प्रेरणा है। तेरापंथ युवक परिषद ने अभिनन्दन स्वर से अपने भाव प्रस्तुत किए। तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलसंगान किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष राणमल फोलामेहता, ते.महिला मंडल अध्यक्षा चंचल भंडारी, युवक परिषद अध्यक्ष मुकेश कंकु चोपड़ा ने शुभकामनाएं दी। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी डॉ राजुल प्रभा जी, साध्वी डॉ चैतन्य-प्रभा जी एवं साध्वी डॉ शौर्य प्रभा जी ने गीत का संगान कर आध्यात्मिक मंगलकामना की। दीक्षार्थी जहान ने कहा- मैं आत्मा से परमात्मा बनने की दिशा में प्रस्थान कर रहा हैं। इन दोनों के बीच महात्मा बनना पड़ता है, यह साधना गुरुचरणों में संभव है। प्रोफेसर साध्वी मंगल प्रज्ञा जी मेरे निर्माण में उपकारी रहे है, इनका स्नेहभरा पथदर्शन मैं भूल नहीं सकता। जहान के पिता प्रवीण और माँ नताशा ने साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के प्रति कृतज्ञता के भाव प्रस्तुत करते हुए कहा- जहान को जीरो से हीरो बनाने का श्रेय प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी को है। बहन जियाना बेताला ने अपने संयम पथगामी अग्रज को शुभकामनाएं दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा Soul Cricket Match' कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसमें जहान को 'संयम कप्तान का विज्ञान विशिष्ट खिताब दिया।

मंच से पिता प्रवीण व माता नताशा, बहन जियाना, और दीक्षार्थी जहान बेताला द्वारा की गई प्रस्तुति से परिषद भावुक बनी। ज्ञानशाला एवं किशोर मंडल द्वारा - 'दीक्षार्थी जहान की आरती कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल द्वारा दीक्षार्थी जहान ओर माता पिता का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी डॉ राजुलप्रभा जी ने किया।

नशा मुक्त समाज और सशक्त पीढ़ी का पावन संकल्प

बाड़मेर।

अणुव्रत समिति बाड़मेर एवं युवा एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत 'नशा मुक्त परिवार, हमारी पीढ़ी–सशक्त पीढ़ी, नया दौर–नई दौड़' की सामाजिक चेतना को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कवास के प्रांगण में नशा मुक्ति शपथ कार्यक्रम एवं मैराथन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों एवं युवाओं को नशे से दूर रहने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा समाज में नशा मुक्ति का संदेश फैलाने का संकल्प दिलाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विभाग संघचालक बाड़मेर मनोहरलाल बंसल रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला खेल एवं युवा अधिकारी पंकज कुमार माडेचा एवं अणुव्रत समिति के सलाहकार गौतम बोथरा उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वागत एवं प्रेरणादायी संदेश के साथ हुआ। अणुव्रत समिति अध्यक्ष पवन संखलेचा ने स्वागत भाषण देते हुए अणुव्रत के सिद्धांतों एवं जीवन में छोटे-छोटे संकल्पों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों एवं युवाओं को अणुव्रत आचार संहिता का वाचन करवाया तथा संयमित एवं नशामुक्त जीवन जीने का आह्वान किया।

दौड़ और शपथ के साथ जन-चेतना का अभूतपूर्व संदेश

मुख्य अतिथि मनोहरलाल बंसल ने विद्यार्थियों एवं युवाओं से संवाद करते हुए कहा कि आज नशा समाज के सामने एक गंभीर चुनौती बन चुका है। नशे की शुरुआत भले ही छोटी लगती हो, लेकिन धीरे-धीरे यह व्यक्ति के स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, परिवार और भविष्य को प्रभावित कर देता है। उन्होंने कहा कि नशे से मुक्त युवा ही देश की मजबूत नींव बन सकते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को नशे के दुष्परिणामों के बारे में जागरूक करते हुए कहा कि युवा स्वयं नशे से दूर रहें और अपने परिवार, मित्रों तथा आसपास के लोगों को भी नशे से बचाने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने उपस्थित सभी विद्यार्थियों एवं युवाओं को नशा मुक्त जीवन जीने की शपथ दिलाई। अणुव्रत समिति के सलाहकार गौतम बोथरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रेरित अणुव्रत आंदोलन पिछले 78 वर्षों से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य कर रहा है। अणुव्रत किसी एक वर्ग या समुदाय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के चरित्र निर्माण और सामाजिक शुद्धि का आंदोलन है। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि युवा शक्ति को नशे जैसी बुराइयों से बचाकर सकारात्मक दिशा प्रदान की जाए। जब युवा नशे से दूर रहेंगे, तभी परिवार स्वस्थ होगा, समाज मजबूत होगा और राष्ट्र सशक्त बनेगा।

उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे स्वयं नशामुक्त रहने के साथ-साथ कम से कम एक व्यक्ति को नशे से मुक्त कराने का संकल्प लें। नशा मुक्ति के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से विद्यालय परिसर में मैराथन का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों एवं युवाओं ने उत्साहपूर्वक इसमें भाग लिया और 'नशा छोड़ो, जीवन जोड़ो', 'नशा मुक्त परिवार–सशक्त परिवार' जैसे संदेशों के माध्यम से समाज को जागरूक किया। इस अवसर पर भामाशाह पारसमल गोलेछा ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए नशामुक्त समाज निर्माण के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि सामाजिक संस्थाओं, विद्यालयों, अभिभावकों और युवाओं को मिलकर नशे के खिलाफ जनजागरण अभियान चलाना चाहिए। कार्यक्रम के लाभार्थी मोतीसिंह सारण एवं महामंत्र यूनिफॉर्म, बाड़मेर का अनुमोदन किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन विद्यालय के प्राचार्य भंवरलाल प्रजापत ने किया।

बाल-प्रतिभा, संस्कारों और रचनात्मकता का भव्य मंच

लाडनूं।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा आयोजित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट–2026 के राष्ट्रीय चरण में चित्रकला एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन 11 अक्टूबर 2026 को ऑनलाइन माध्यम से किया गया। देशभर के विभिन्न राज्यों से चयनित 66 विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी रचनात्मक प्रतिभा, कल्पनाशीलता एवं अभिव्यक्ति कौशल का परिचय दिया। कार्यक्रम से 100 से अधिक प्रतिभागी, शिक्षकगण, अभिभावक एवं सहयोगी सदस्य ऑनलाइन माध्यम से जुड़े।

कार्यक्रम का शुभारंभ गुरुदेव के मंगल पाठ एवं अणुव्रत गीत का संगान किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप दुगड़ ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास एवं निरंतर प्रयास के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा पहचानकर उसका श्रेष्ठ उपयोग करने तथा जीवन में संस्कारों और नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता देने का संदेश दिया। ACC पर्यवेक्षक एवं उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लूनिया ने विद्यार्थियों का आत्मबल बढ़ाते हुए उन्हें अच्छे संस्कारों से युक्त, जिम्मेदार एवं जागरूक नागरिक बनने की प्रेरणा दी। उन्होंने रचनात्मक गतिविधियों को बच्चों के व्यक्तित्व विकास, संवेदनशीलता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के निर्माण

चित्रकला और निबंध प्रतियोगिता से निखरी राष्ट्रीय स्तर की अभिव्यक्ति

का महत्वपूर्ण माध्यम बताया। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के राष्ट्रीय संयोजक राजेश चावत द्वारा अर्हम ध्यान के का वातावरण आध्यात्मिकता, सकारात्मकता एवं उत्साह से परिपूर्ण हो गया। राष्ट्रीय संयोजक राजेश चावत ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट–2026 की सहभागिता एवं उपलब्धियों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता में देश-विदेश के विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों से विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। विभिन्न चरणों से चयनित विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। राजेश चावत ने बच्चों को 'I Am the Best' का सकारात्मक संकल्प अपनाने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक बच्चे में विशिष्ट प्रतिभा होती है और आवश्यकता है उसे पहचानने, उस पर विश्वास करने तथा निरंतर निखारने की। उन्होंने विद्यार्थियों से स्वयं की पीठ थपथपाकर अपनी क्षमताओं को स्वीकार करने और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का आह्वान किया। सोनल कोठारी ने प्रतियोगिता के नियमों, आवश्यक दिशा-निर्देशों एवं कार्यप्रणाली की विस्तृत जानकारी दी। इस पहल का उद्देश्य बच्चों की सृजनशीलता को सम्मान देना तथा उनमें आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच और रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना है।

कार्यक्रम का कुशल संचालन राष्ट्रीय सहसंयोजिका साधना कोठारी ने किया, जबकि तकनीकी संचालन में ऋषभ बरडिया का विशेष सहयोग रहा उन्होंने स्पेशल पोर्टल के माध्यम से बच्चों के डाटा को अपलोड करवाया। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट–2026 केवल एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि बच्चों में रचनात्मकता, आत्मविश्वास, नैतिक मूल्यों एवं सकारात्मक जीवन-दृष्टि विकसित करने का एक सार्थक प्रयास है। 'हमारी ताकत–हमारा परिवार' की मूल भावना से प्रेरित यह आयोजन विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा निखारने के साथ-साथ संस्कारयुक्त एवं जिम्मेदार व्यक्तित्व के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 अक्टूबर - 01 नवम्बर 2026

तनावमुक्ति, मन की शांति और आत्मानुशासन का पावन पर्व

केसिंगा।

संयम, ध्यान और त्याग के नियमों से सशक्त होती अध्यात्म धारा

स्थानीय तेरापंथ भवन, केसिंगा में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि हेमंत कुमार जी के पावन सान्निध्य में नवरात्रि के शुभ अवसर पर नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन किया जा रहा है।इस नौ दिवसीय अनुष्ठान में श्रद्धालु उत्साहपूर्वक भाग लेकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

अनुष्ठान के अंतर्गत ग्रह शांति, मन की शांति, क्रोध पर नियंत्रण तथा मानसिक स्थिरता जैसे विषयों को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव, क्रोध, अशांति और मानसिक उलझनों से जूझ रहे लोगों के लिए यह आयोजन आत्मचिंतन, संयम और सकारात्मक जीवनशैली की दिशा में प्रेरणादायी बन रहा है। अनुष्ठान प्रतिदिन दो समय आयोजित किया जा रहा है। भारतीय संस्कृति में नवरात्रि को साधना, उपासना, आत्मशुद्धि और आत्मबल जागृत करने का विशेष पर्व माना जाता है। इन नौ दिनों में श्रद्धालु प्रार्थना, ध्यान, उपवास और धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से स्वयं को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास करते हैं। इस अवसर पर मुनि जी ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को एकासन, बियासन, आयम्बिल, जमीकंद के त्याग तथा रात्रि भोजन त्याग जैसे अनेक आध्यात्मिक संकल्प अपनाने की प्रेरणा दी। इन नियमों के माध्यम से खान-पान में संयम, इंद्रियों पर नियंत्रण, जीवों के प्रति करुणा और दैनिक जीवन में अनुशासन विकसित करने का संदेश दिया जा रहा है।

मंत्रोच्चार और विधिवत संस्कारों के साथ तपस्या का अभिनंदन

साउथ हावड़ा।

आत्मबल और आध्यात्मिक साधना की भावपूर्ण अनुमोदना साउथ

तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के त्रिआयाम सेवा–संस्कार–संगठन के अंतर्गत जैन संस्कार विधि के माध्यम से तप संपूर्ति अनुष्ठान श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक गरिमा के साथ सम्पन्न कराया गया। इस पावन अवसर पर नोहर भादरा निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी जवरीमल - राजश्री नाहटा के सुपौत्र एवं ललित - जयश्री नाहटा के सुपुत्र ईशान नाहटा के 8 की तपस्या की संपूर्ति जैन संस्कार विधि के अनुसार विधिवत् सम्पन्न हुई।

संस्कारक बजरंगलाल डागा एवं राकेश चौरड़िया ने जैन मंत्रोच्चार के साथ संपूर्ण संस्कार सम्पन्न कराया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। परिषद् के सहमंत्री भानु प्रताप चौरड़िया ने परिवार को मंगल भावना भेंट की, जिसकी स्थापना जैन मंत्रोच्चार के साथ पारिवारिकजनों द्वारा सम्पन्न की गई। संस्कारकों ने मंगल मंत्रों के श्रवण के माध्यम से उपस्थित सभी परिजनों को आध्यात्मिक मंगलकामनाओं का संदेश प्रदान किया। इस अवसर पर सहमंत्री भानु प्रताप चौरड़िया ने तपस्वी की तपस्या की भावपूर्ण अनुमोदना करते हुए उनके आत्मबल, संयम, श्रद्धा एवं आध्यात्मिक साधना की सराहना की तथा तप की इस प्रेरणादायी साधना को सभी के लिए अनुकरणीय बताया। कार्यक्रम के समापन पर पारिवारिक जनों ने जैन संस्कार विधि के माध्यम से तप संपूर्ति अनुष्ठान को गरिमापूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने हेतु तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया। जैन संस्कार विधि के संयोजक जयप्रकाश बांठिया ने तपस्या की अनुमोदना करते हुए उपस्थित सभी का आभार व्यक्त किया।

दस दिवसीय साधना एवं मंगल भावनाओं की पवित्र यात्रा

सिकंदराबाद।

प्रवचनों के माध्यम से आत्मानुशासन और आंतरिक आभा के विकास का संदेश

सिकंदराबाद की डी.वी. कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में रविवार को युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी ठाणा-2 के सानिध्य में नवरात्रि आध्यात्मिक अनुष्ठान एवं विशेष प्रवचनमाला का शुभारंभ हुआ। नवरात्रि के पावन अवसर पर आयोजित इस आध्यात्मिक कार्यक्रम में मंत्राराधना, साधना और प्रेरणादायी प्रवचन के माध्यम से आत्मशक्ति के जागरण तथा जीवन को मंगलमय बनाने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि जी ने आचार्यप्रवर द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक अनुष्ठान का प्रयोग करवाया। मंत्रों की पवित्र ध्वनियों से तेरापंथ भवन का वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण हो उठा।

नवरात्रि पर विशेष प्रवचन करते हुए मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि नवरात्रि शक्ति जागरण का महत्त्वपूर्ण समय है। यह समय केवल बाहरी उत्सव मनाने का नहीं, बल्कि अपनी सुप्त आध्यात्मिक शक्तियों को पहचानने, उन्हें जागृत करने और जीवन को सकारात्मक दिशा देने का अवसर है। मुनि जी ने कहा कि इस विशेष अवधि में मंत्रों की आराधना और साधना का अपना महत्त्व है। मंत्र साधना व्यक्ति के मन को एकाग्र करने, आत्मविश्वास को सुदृढ़ बनाने तथा कठिन परिस्थितियों का सामना करने की आंतरिक क्षमता विकसित करने में सहायक हो सकती है। जीवन में अनेक बार विघ्न-बाधाएं आती हैं। ऐसे समय में आध्यात्मिक चेतना, धैर्य, विवेक और दृढ़ संकल्प व्यक्ति को परिस्थितियों से उबरने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने शक्ति की साधना के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शक्ति का उपयोग अच्छे कार्यों के लिए भी किया जा सकता है और दूसरों के अनिष्ट के लिए भी। इसलिए आवश्यक है कि हमारी शक्ति का उपयोग सदैव सद्कार्यों, आत्मकल्याण और जनकल्याण के लिए हो। शक्ति के साथ सद्बुद्धि, विवेक और मंगल भावना का होना भी जरूरी है। शक्ति तभी सार्थक बनती है, जब उसका उपयोग किसी के अहित के लिए नहीं, बल्कि जीवन में शुभता के संवर्धन के लिए किया जाए।

मुनि जी ने नवरात्रि के विशेष प्रवचनों की विषयवस्तु पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नौ मंगल भावनाएं जीवन में मंगल का अवतरण करने वाली हैं। इन भावनाओं को केवल सुनना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि इन्हें अपने व्यवहार, विचार और आचरण में उतारना आवश्यक है। उन्होंने प्रेरणा देते हुए कहा कि इस नवरात्रि में हम मंगल भावनाओं से संपन्न बनें। हमारा जीवन शुभ विचारों, पवित्र भावनाओं और सद्कार्यों से समृद्ध हो। व्यक्ति की वास्तविक प्रगति केवल बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उसके आंतरिक व्यक्तित्व और भावनात्मक समृद्धि से भी मापी जाती है। मुनि जी ने कहा कि हमें बाहर से भी और भीतर से भी आभा-संपन्न बनना है। बाहरी व्यक्तित्व के साथ आंतरिक चेतना का विकास भी जरूरी है। हमारे विचारों में पवित्रता, व्यवहार में मधुरता, संकल्पों में दृढ़ता और जीवन में मंगल भावना हो। ऐसी आंतरिक आभा व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाती है तथा उसके जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करती है। प्रवचन के दौरान मुनि जी ने दरिद्रता के विषय को भी महत्त्वपूर्ण बताया।

उन्होंने कहा कि जीवन में दरिद्रता सबसे बड़ा अभिशाप है। इस संदर्भ में जीवन की समृद्धि को केवल बाहरी साधनों अथवा भौतिक संपन्नता तक सीमित न मानकर, आंतरिक गुणों, सद्भावनाओं और आध्यात्मिक संपदा के विकास की दिशा में भी चिंतन करना चाहिए। सच्ची समृद्धि वह है, जिसमें व्यक्ति के जीवन में सद्विचारों का वैभव, भावनाओं की निर्मलता, आत्मविश्वास और मंगल दृष्टिकोण हो। नवरात्रि साधना के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में ऐसी आध्यात्मिक संपदा विकसित करने का संकल्प ले सकता है। नवरात्रि के अवसर पर आयोजित इस विशेष

मौन, जप और आत्मसाधना से अंतःचेतना का जागरण

गुवाहाटी ।

नौ दिवसीय पावन अनुष्ठान का भक्तिमय वातावरण में प्रारंभ

शक्ति जागरण के पावन पर्व नवरात्रि के उपलक्ष्य में तेरापंथ धर्मस्थल, गुवाहाटी में आचार्यश्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी के सान्निध्य में नौ दिवसीय नवाह्निक अनुष्ठान का शुभारंभ हुआ। आध्यात्मिक ऊर्जा, जप, तप और आत्मसाधना को समर्पित इस अनुष्ठान का प्रारंभ मुनि जी द्वारा महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। तत्पश्चात मुनि जी ने भगवान महावीर स्वामी के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति से ओतप्रोत एक भावपूर्ण गीतिका का संगान किया, जिससे वातावरण आध्यात्मिक भावधारा से सराबोर हो गया। इस नौ दिवसीय अनुष्ठान के अंतर्गत मुनि विकास कुमार जी विशेष मौन साधना करेंगे। वहीं मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' भी काफी समय तक मौन साधना में रहकर आत्मचिंतन एवं आध्यात्मिक ऊर्जा के संवर्धन में समय नियोजित करेंगे। दोनों मुनि जी 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का सवा लाख जाप करेंगे। यह आध्यात्मिक उपक्रम श्रद्धा, एकाग्रता और साधना की भावना को सुदृढ़ करने का माध्यम बनेगा। नवरात्रि का यह पावन अवसर केवल शक्ति आराधना का ही नहीं, बल्कि आंतरिक शक्तियों के जागरण, आत्मानुशासन और आध्यात्मिक चेतना के विकास का भी संदेश देता है। मौन, मंत्रजाप और साधना के माध्यम से साधक अपनी अंतःचेतना को जागृत करने तथा जीवन में शांति, संयम एवं सकारात्मकता का संचार करने का प्रयास करेंगे। अनुष्ठान के दौरान नवपद आराधना के अंतर्गत विभिन्न मंत्रों का निर्धारित मालाओं में जाप, तपस्या एवं वैकल्पिक तप की आराधना भी की जाएगी। रात्रिकालीन सत्र में अर्हत् वंदना के पश्चात उपसर्गहर स्तोत्र सहित निर्धारित स्तोत्रों एवं 'विघ्न हरण मंगलकरण' का पाठ होगा। सहभागी श्रावक-श्राविकाओं के लिए ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रिभोजन का त्याग एवं जमीकंद का वर्जन जैसे नियम निर्धारित किए गए हैं।

महिला सशक्तीकरण और प्रतिभा निखार का सुंदर आयोजन

राउरकेला।

तेरापंथ महिला मंडल, राउरकेला द्वारा तेरापंथ भवन, बसंती कॉलोनी में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में करणीय कार्यशाला 'मेरी शक्ति, मेरी कहानी – नारी की शक्ति, नारी की जुबानी' का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र की मंगल ध्वनि के साथ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत कर वातावरण को मंगलमय बनाया। तत्पश्चात मंडल की बहनों ने अपनी जीवन यात्रा और अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि किस प्रकार उन्होंने जीवन में आने वाली विभिन्न चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना किया और संघर्षों से सीख लेकर आज इस मुकाम तक पहुँचीं।उनकी प्रेरणादायक कहानियों ने सभी को उत्साह, आत्मविश्वास और सकारात्मकता का संदेश दिया। इसके पश्चात अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशनानुसार युवती मंडल की बहनों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इनमें भाषण प्रतियोगिता, कविता प्रतियोगिता एवं आर्ट व क्रिएटिविटी प्रतियोगिता शामिल रहीं। युवती बहनों ने पूरे उत्साह, रचनात्मकता और उमंग के साथ भाग लेकर अपनी प्रतिभा का सुंदर प्रदर्शन ।भाषण प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान कनक दुगड़, द्वितीय स्थान पूजा दुग्गड़,कविता प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान कोमल डोसी ,द्वितीय स्थान मीनाक्षी बोथरा तथाआर्ट प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान ज्योति भंसाली ,-द्वितीय स्थान कनक दुगड़ एवं तृतीय स्थान मनीषा डोसी रही।प्रतियोगिताओं का निर्णायक दायित्व कनक बोथरा, मधु गोलछा एवं नीतू कोठारी ने निभाया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मीनाक्षी बोथरा एवं प्रियंका कोचर ने किया।इसी क्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के कन्या मंडल विभाग के निर्देशन में दीपावली के अवसर पर आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में कन्या मंडल की बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।सभी ने अपनी कलात्मकता और रचनात्मकता का परिचय देते हुए सुंदर एवं आकर्षक रंगोलियाँ प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम के अंत में कोमल डोसी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। मंडल की अध्यक्ष संगीता दुग्गड़ ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।समग्र रूप से यह कार्यशाला अत्यंत प्रेरणादायक, उत्साहपूर्ण एवं सफल रही। इस आयोजन ने महिलाओं को अपनी शक्ति पहचानने, जीवन के अनुभव साझा करने तथा युवती एवं कन्या मंडल की बहनों को अपनी प्रतिभा निखारने का एक सुंदर अवसर प्रदान किया।

विविध प्रतियोगिताओं से निखरीं युवतियाँ एवं कन्याएँ

श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ संपन्न हुई भिक्षु धम्म जागरणा

कोलकाता।

224वें चरमोत्सव के पावन अवसर पर तेरापंथ साउथ सभा में भिक्षु धम्म जागरणा का आयोजन श्रद्धा एवं भक्ति के साथ किया गया। कार्यक्रम में साउथ सभा के अध्यक्ष राजेश भूतोड़िया, मंत्री सुशील सेठिया एवं कोषाध्यक्ष रतन लाल सेठिया की गरिमामयी उपस्थिति रही।

तेरापंथ प्रोफेशनल्स साउथ कोलकाता के अध्यक्ष मनीष सेठिया तथा विशेष आमंत्रित अतिथि आनंद मनोत ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की।

आनंद मनोत ने पहली बार विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में सहभागिता करते हुए भजनों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद, साउथ कोलकाता की ओर से उपाध्यक्ष प्रथम जिनेंद्र सुराणा, संयुक्त मंत्री प्रथम प्रतीक चंडालिया एवं तेयुप साउथ कोलकाता के पूर्व अध्यक्ष राकेश नाहटा उपस्थित रहे।

सुरसंगम टीम के राजेश गौटी एवं राकेश नाहटा सहित अन्य प्रस्तुतकर्ताओं ने भक्तिमय भजनों से समां बांध दिया। महिला सहभागियों की भजन प्रस्तुतियों ने भी कार्यक्रम को विशेष भक्तिमय स्वरूप प्रदान किया। भक्ति संगीत से संपूर्ण वातावरण मंगलमय एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण हो गया। इस भिक्षु धम्म जागरणा के प्रायोजक कल्याणमित्र समाजभूषण बिशनदयाल कैलाशचंद गोयल परिवार रहे।

तीन पीढ़ियों के अनुभव, संघर्ष और संगठनात्मक सफर का अद्भुत संगम

उधना।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, उधना द्वारा अपनी स्थापना के गौरवशाली 35 वर्षों के उपलक्ष्य में आयोजित ऐतिहासिक त्रि-दिवसीय महोत्सव 'अविराम 35 – स्थापना से अनंत सफर की ओर...' के अंतर्गत तेरापंथ भवन, उधना में 'मंथन – THE TALK SHOW' का अत्यंत गरिमामय, भव्य एवं प्रेरणादायी आयोजन संपन्न हुआ। यह आयोजन मात्र एक परिचर्चा नहीं, बल्कि परिषद् की 35 वर्षों की संघर्षपूर्ण यात्रा, उपलब्धियों, समर्पण एवं संगठनात्मक विरासत का अद्भुत संगम बना, जहाँ अतीत के अनुभवों ने वर्तमान को समृद्ध किया और भविष्य के लिए नई दिशा प्रदान की। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। इस अवसर पर साध्वी डॉ. परमयशा जी ठाणा-4 का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। साध्वी जी ने अपने प्रेरणादायी मंगल पाथेय से युवा शक्ति को संगठन, समर्पण एवं संस्कारों की प्रेरणा प्रदान की तथा मंगलपाठ सुनाकर कार्यक्रम को आध्यात्मिक शुभाशीष प्रदान किया। इस गरिमामय आयोजन में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के उधना शाखा प्रभारी कुलदीप कोठारी की विशेष उपस्थिति रही, जिससे कार्यक्रम की गरिमा और अधिक अभिवृद्धि हुई। परिषद् अध्यक्ष मनीष कावड़िया ने अपने स्वागत वक्तव्य में सभी पूर्व अध्यक्षों, पूर्व मंत्रियों एवं उपस्थित महानुभावों के प्रति आत्मीय भाव व्यक्त करते हुए परिषद् के 35 वर्षों के गौरवशाली सफर में वरिष्ठों के अमूल्य योगदान का स्मरण किया। इस विशेष टॉक शो का प्रभावशाली संचालन होस्ट के रूप में तेरापंथ टाइम्स के संपादक जयेश मेहता एवं सरगम प्रवृत्ति सलाहकार सुनील चंडालिया ने किया। दोनों अनुभवी होस्ट ने अपनी प्रभावशाली संवाद शैली, रोचक प्रश्नों एवं सारगर्भित प्रस्तुति से संपूर्ण परिचर्चा को अत्यंत जीवंत एवं ज्ञानवर्धक बना दिया। कार्यक्रम में परिषद् के 18 पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्रियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए अपने-अपने कार्यकाल के संघर्ष, चुनौतियों, उपलब्धियों, ऐतिहासिक निर्णयों एवं अविस्मरणीय संस्मरणों को साझा किया। प्रश्नोत्तरी के माध्यम से परिषद् के 35 वर्षों के अनेक अनछुए एवं प्रेरणादायी अध्याय सामने आए। किसी ने संगठन की प्रारंभिक चुनौतियों को याद किया, तो किसी ने नेतृत्व, टीम भावना, कार्यकर्ताओं के समर्पण एवं संगठनात्मक विकास के महत्त्वपूर्ण अनुभव साझा किए। यह मंथन केवल अतीत की स्मृतियों का पुनरावलोकन नहीं, बल्कि तीन पीढ़ियों के अनुभव, चिंतन और संकल्पों को एक सूत्र में पिरोने का सार्थक प्रयास बना। इस वैचारिक मंथन की विशेष उपलब्धि रही कि पूर्व पदाधिकारियों के अनुभवों से वर्तमान युवा नेतृत्व को संगठनात्मक कार्यप्रणाली, नवाचार, नेतृत्व विकास एवं भविष्य की गतिविधियों को अधिक प्रभावशाली बनाने की महत्त्वपूर्ण प्रेरणा प्राप्त हुई। 'वरिष्ठों का अनुभव जब युवाओं की ऊर्जा से जुड़ता है, तब संगठन का इतिहास केवल गौरवगाथा नहीं रहता, बल्कि भविष्य की नई सफलताओं का आधार बन जाता है।' सेवा, संस्कार एवं संगठन के मूल उद्देश्यों को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में यह आयोजन एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणास्रोत सिद्ध हुआ। कार्यक्रम के अंतिम चरण में इस वैचारिक आयोजन को समुद्र मंथन की प्रेरक अवधारणा से जोड़ते हुए यह भाव व्यक्त किया गया कि— 'जिस प्रकार समुद्र मंथन से अमृत की प्राप्ति हुई थी, उसी प्रकार आज के इस वैचारिक मंथन से अनुभवों का अमृत, नेतृत्व की सीख, संगठन की शक्ति और भविष्य के लिए नवसंकल्प प्राप्त हुए हैं।' 'इन अनुभवों का अमृत केवल स्मृतियों तक सीमित न रहे, बल्कि परिषद् के प्रत्येक आगामी कार्य एवं नए आयाम में दिखाई दे, यही इस मंथन की वास्तविक सार्थकता होगी।' कार्यक्रम के अंतिम चरण में दोनों विशिष्ट होस्ट जयेश मेहता एवं सुनील चंडालिया का परिषद् द्वारा स्मृति-चिह्न (मोमेंटो) प्रदान कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन परिषद् मंत्री कमलेश डांगी ने किया। परिषद् परिवार की ओर से सभी पूर्व अध्यक्षों, पूर्व मंत्रियों, विशिष्ट अतिथियों, दोनों होस्ट, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं उपस्थित समाजजनों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की गई।

गरिमापूर्ण टॉक शो में वरिष्ठों के अनुभवों से मिला नया संकल्प

छात्रों ने उत्साह के साथ किया स्वेच्छा से रक्तदान

हासन।

तेरापंथ युवक परिषद ने सरकारी साइंस कॉलेज को जरूरत के हिसाब से पेयजल फिल्टर इकाई समर्पित की एवं इसका उद्घाटन का कार्यक्रम के तहत रक्तदान शिविर का कार्यक्रम तेरापंथ युवक परिषद ने भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी हासन जिला शाखा, सरकारी साइंस कॉलेज की युवा रेड क्रॉस इकाई संयुक्त तत्वावधान रक्तदान शिविर का आयोजन में 83 छात्रों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। इस कार्यक्रम की शुरुआत महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करके की गई। प्रोफेसर रवि ने अतिथियों का स्वागत किया। भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी की हासन जिला शाखा के अध्यक्ष हेमीगे मोहन ने बात करते हुए कहा, की स्वच्छ जल स्वस्थ जीवन का पहला कदम है इस लिए आज तेरापंथ युवक परिषद ने एक सराहनीय काम किया है। रक्तदान के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करना और जरूरतमंद मरीजों को सुरक्षित रक्त उपलब्ध कराना इसका मुख्य उद्देश्य है। युवाओं को बिना कोई भी कार्य सफल नहीं हो सकता। विश्वविद्यालय के युवा रेड क्रॉस इकाई के नोडल अधिकारी डॉ. बी.एस. रविकुमार ने कहा कि तेरापंथ युवक परिषद के विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों में अनुशासन, सेवा की भावना और नेतृत्व गुणों का विकास हो रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर नटराज के. ने कहा कि रक्तदान एक श्रेष्ठ दान है। रक्त दान की तरह स्वच्छ पानी की भी बहुत अवश्यकता होती है आज तेरापंथ युवक परिषद ने एक अच्छा काम किया है हम उनका भी अभिनंदन करते है, इस कार्यक्रम मैं। हासन तेरापंथ सभा अध्यक्ष शोहनलाला तातेड, TPF अध्यक्ष डॉ जयन्ती लाल कोठारी, युवक परिषद अध्यक्ष विकाश कोठारी, मंत्री अरिहंत गुलगुलिया की उपस्थिति रही।

कॉलेज को सौंपी गई पेयजल फिल्टर इकाई

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 अक्टूबर - 01 नवम्बर 2026

मौन साधना एवं जप अनुष्ठान से अध्यात्म की नई मिसाल

गुवाहाटी।

आत्मशुद्धि, समता और कषाय मुक्ति ही सच्चा धर्म

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी इस तरह अवश्य लिखे के विद्वान सुशिष्य मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी ठाणा - 2 के पावन सान्निध्य एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के तत्वावधान में 'शक्ति जागरण' महापर्व के अंतर्गत नौ दिवसीय नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का क्रम निरंतर जारी है।

इस अवसर पर दोनों मुनिजी द्वारा 'ॐ भिक्षु - जय भिक्षु' का सवा लाख जप अनुष्ठान किया जा रहा है। इस नवाह्निक आध्यात्मिक उपक्रम की विशेषता यह है कि मुनि विकास कुमार जी ने नौ दिनों की मौन साधना 13 द्रव्य के साथ विभिन्न क्षेत्रों के प्रवास के दौरान संपन्न की। इस साधना क्रम में गुरु सन्निधि में छापर, बीरगंज, निर्मली, अररिया कोर्ट, कूचबिहार, सिलीगुड़ी एवं गुवाहाटी सहित विभिन्न स्थानों पर साधना का क्रम जारी रहा। वहीं मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने भी नौ दिनों की मौन साधना 4 द्रव्य के साथ की। दोनों मुनिजी द्वारा मौन साधना के साथ 'ॐ भिक्षु - जय भिक्षु' के सवा लाख जप का अनुष्ठान किया जा रहा है।

मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने बताया कि दोनों मुनिजी ने 10 दिनों की मौन साधना के साथ 'ॐ भिक्षु - जय भिक्षु' के सवा लाख जप अनुष्ठान में 1160 मालाओं के फेरने तथा 13 द्रव्य और 4 द्रव्य के संकल्प के साथ साधना संपन्न कर दूसरी बार इस आध्यात्मिक उपक्रम को पूर्ण किया। इस साधना के माध्यम से गुवाहाटी में एक नया कीर्तिमान स्थापित हुआ है। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने कहा कि धर्म की परिभाषा समझने में अनेक बार कठिनाइयां आती हैं। धर्म क्या है, इसे आज के युग में सीमित शब्दों में परिभाषित नहीं किया जा सकता। दर्शन की भाषा में धर्म आत्मा की शुद्धि है। साहित्य की भाषा में जिसके द्वारा ज्ञान, आनंद और शक्ति का विकास हो, वही धर्म है। मनोविज्ञान की भाषा में समता धर्म का मूल तत्व है, जबकि कषायों से मुक्ति इसकी प्रमुख पहचान है। जो व्यक्ति क्रोध, मान, माया और लोभ जैसी कषायों से मुक्त होता है, वही सही अर्थों में धार्मिक है। मुनिजी ने कहा कि क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष, भय, घृणा और हीन भावना जैसी मनोवृत्तियां अधर्म की ओर ले जाती हैं। धर्म उसी के जीवन में टिकता है, जो आंतरिक रूप से शक्तिशाली, पवित्र और भयमुक्त होता है। अभय, समता और क्षमाशीलता धर्म के महत्वपूर्ण आधार हैं।

दूसरों की उन्नति देखकर उनके विकास की कामना करना, मैत्री भावना का विकास करना, क्रोध से बचना, सरलता, ऋजुता, संतोष और कर्तव्य का पालन करना धर्म है। उन्होंने कहा कि धर्म जीवन जीने की कला है—स्वयं सुख से जीना और दूसरों को भी सुखपूर्वक जीने देना। विकारों से मुक्त रहकर निर्मल चित्त से आचरण करना ही जीवन की सच्ची कला है। जब व्यक्ति अपने व्यवहार को शुद्ध बनाता है, तब वह स्वयं के साथ-साथ दूसरों के सुख और शांति का भी निमित्त बनता है। सबसे बड़ा धर्म दूसरों की भलाई करना है।

विशेष साधना पद्धति का बहुमान

जयपुर।

ध्यान के निरंतर अभ्यास और उपयोगिता पर बल

अणुविभा, महाप्रज्ञ सभागार में प्रेक्षा पुरस्कार से सम्मानित विजया छाजलानी का सम्मान समारोह मुनि तत्त्व रुचिजी तरुण एवं मुनि संभव कुमारजी स्वामी के पावन सान्निध्य में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि ने ध्यान की महत्ता बताते हुए, प्रेक्षा ध्यान की महत्ता पर प्रकाश डाला और अभ्यास पर जोर दिया। मुनि संभव कुमार स्वामी ने मधुर गीतिका का संगान कर माहौल को भक्तिमय बना दिया। शहर महिला मंडल अध्यक्ष कौशल्या जैन ने बताया कि आज से 50 वर्ष पूर्व आचार्यश्री तुलसी के मार्गदर्शन में आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा इस विशेष ध्यान पद्धति का नामकरण 'प्रेक्षा ध्यान' के रूप में जयपुर के ग्रीन हाउस में किया गया था। यह जयपुर का सौभाग्य है कि 52 साल बाद यह पुरस्कार जयपुर की ही एक बहन को प्राप्त हुआ है। विजया छाजलानी ने प्रेक्षा पुरस्कार तक की अपनी पूरी यात्रा के अनुभव एवं विचार साझा किए। महिला मंडल की बहनों द्वारा दुपट्टा ओढ़ाकर उनका सम्मान किया गया। कार्यक्रम में हिम्मत डोसी, प्रदीप डोसी, सुरेन्द्र बड़ला आदि गणमान्य जनों एवं महिला मंडल की बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। अंत में मंत्री पायल जैन द्वारा सभी का आभार ज्ञापन किया गया।

पृष्ठ 16 का शेष

'कम खाना, गम खाना...

१. युवाचार्यश्री की मंगल प्रेरणा : मंगल प्रवचन के उपरांत नौ दिवसीय 'सघन साधना शिविर' के शिविरार्थियों को युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने पावन प्रेरणा प्रदान की।

२. अभिव्यक्तियाँ एवं प्रस्तुतियाँ : कार्यक्रम में गौतमचंद डोसी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला बेंगलोर तथा 'जैन विद्या' से जुड़े ज्ञानार्थियों एवं विद्यार्थियों ने अपनी सुंदर प्रस्तुतियाँ दीं।

३. ज्ञान-विकास पर आचार्यश्री का संदेश : आचार्यश्री ने पुनः मंगल प्रेरणा देते हुए फरमाया कि यदि व्यक्ति 'जैन विद्या' के अध्ययन और ज्ञानार्जन के लिए समय निकाले, तो ज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट विकास हो सकता है। सभी को धार्मिक अध्ययन करना चाहिए; साथ ही अध्ययन कराने वाले शिक्षक भी अपना समय और योगदान दें तो यह समाज और संघ का एक अत्यंत उत्तम कार्य हो सकता है।

बोलती किताब

अपना दर्पण : अपना बिम्ब

जीवन के हर पहलू को समझने की दृष्टि



आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक 'अपना दर्पण : अपना बिम्ब' व्यक्ति को बाहरी दुनिया के साथ-साथ अपने भीतर देखने की प्रेरणा देती है। पुस्तक में दर्पण को आत्म-दर्शन के प्रतीक के रूप में समझाया गया है। सामान्य दर्पण में हमें शरीर का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है, लेकिन प्रेक्षा के माध्यम से अपने वास्तविक स्वरूप को जानने की दिशा बताई गई है। पुस्तक का मूल विचार आत्मा और चेतना की पहचान से जुड़ा है।

पुस्तक में प्रेक्षा को एक ऐसे दर्पण के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की अवस्थाओं को देख सकता है। प्रेक्षाध्यान केवल ध्यान की एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि आत्म-दर्शन और आंतरिक शोधन का माध्यम है। इसके अभ्यास से पुराने संस्कारों के क्षय और चेतना के परिष्कार की दिशा में आगे बढ़ने की बात कही गई है।

पुस्तक में जीवन को केवल शरीर तक सीमित न मानकर शरीर, श्वास, प्राण, मन, भाव, कर्म और चित्त-चेतना के समन्वित रूप में समझाया गया है। प्रेक्षाध्यान में इन सभी आयामों को समझने और उनके परिष्कार पर ध्यान दिया जाता है। मन की एकाग्रता और भावों की शुद्धि को स्वस्थ एवं संतुलित जीवन के लिए महत्वपूर्ण माना गया है।

पुस्तक में भावक्रिया को जीवन में सफलता का महत्वपूर्ण सूत्र बताया गया है। जब व्यक्ति जो कार्य कर रहा हो, उसके साथ उसकी चेतना भी जुड़ी रहती है, तब वह कार्य अधिक प्रभावी और सार्थक बनता है। वर्तमान में जागरूक रहना, जानते हुए कार्य करना और अपनी प्रत्येक क्रिया में चेतना को जोड़ना भावक्रिया के प्रमुख आयाम बताए गए हैं।

पुस्तक व्यक्ति को तत्काल प्रतिक्रिया देने के बजाय प्रतिक्रिया-विरति का अभ्यास करने की प्रेरणा देती है। क्रोध या आवेश में तुरंत प्रतिक्रिया करने से शत्रुता बढ़ सकती है, जबकि प्रतिक्रिया के समय को थोड़ा रोकने से परिस्थितियां शांत हो सकती हैं। इसी के साथ मैत्री और बंधुता की भावना विकसित करने पर जोर दिया गया है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

'सेवा उपकार नहीं...

२. युवाचार्य मनोनयन की दो स्थितियाँ: आचार्य प्रवर ने संघ इतिहास के दृष्टांतों से स्पष्ट किया कि युवाचार्य दो अवस्थाओं में बनाए जा सकते हैं: जब आचार्य को लगे कि अवस्था आ गई है, समय कम बचा है या कार्य करने में शारीरिक अक्षमता महसूस हो रही है। जैसे—कालूगणी जी जब अक्षम अथवा रुग्ण थे, उस समय मुनि तुलसी को तत्काल युवाचार्य बनाना आवश्यक हो गया था और युवाचार्य को आचार्य की सेवा के साथ-साथ संघीय व्यवस्थाओं को भी संभालना पड़ा था। जब आचार्य पूरी तरह स्वस्थ और सक्षम हों, परंतु उनकी स्वयं की इच्छा हो जाए। जैसे—आचार्यश्री तुलसी पूर्णतः स्वस्थ थे और शरीर से कोई अक्षमता नहीं थी, फिर भी उन्होंने अपनी प्रसन्नता से मुनिश्री नथमल जी स्वामी (टमकौर) को अपना युवाचार्य मनोनीत किया था।

समता भाव और तीर्थंकर नामगोत्र का अर्जनः

१. अग्लान भाव और सहनशीलता : आचार्य, युवाचार्य के साथ-साथ यदि कोई साधु तपस्वी हो, वृद्ध हो, स्थविर हो या कोई साधु ग्लान (बीमार/रुग्ण) हो, तो उनकी अग्लान भाव से सेवा करनी चाहिए। यदि सेवा लेने वाला व्यक्ति किसी कारणवश कुपित भी हो जाए, तो सेवा करने वाले को आवेश या गुस्से में नहीं आना चाहिए।

२. तीर्थंकर नामगोत्र का बंध : शास्त्र में पूछे गए प्रश्न का समाधान करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि निष्काम वैयावृत्य से जीव तीर्थंकर नामगोत्र का अर्जन करता है। यह सेवा भावना साधक को समस्त दुःखों से मुक्त कर सीधे मोक्ष की ओर ले जाने वाली होती है।

३१ दिन का तप-प्रत्याख्यान एवं शंका-समाधान : तपस्या का प्रत्याख्यान व जिज्ञासा समाधानः मंगल प्रवचन के उपरांत पूज्य प्रवर के चरणों में साध्वी प्रतिभाश्री सीजी ने ३१ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान ग्रहण किया। तत्पश्चात् आचार्यश्री ने सघन साधना शिविर के शिविरार्थियों द्वारा प्रस्तुत की गई आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान प्रदान किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम के आलोक में 'सद्भाव प्रत्याख्यान' के पारमार्थिक स्वरूप को फरमाया

'श्वेतांबर हो या दिगंबर, कषाय-मुक्ति ही है मोक्ष का सच्चा द्वार' : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर ने सघन साधना शिविरार्थियों को संयम अभ्यास की दी प्रेरणा

लाडनूं।
13 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति के प्रेरक, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी पावन वाणी से जन-जन को आलोकित कर रहे हैं। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम हेतु निर्धारित विषय 'सद्भाव प्रत्याख्यान से क्या मिलेगा?' को उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से व्याख्यायित करते हुए आचार्यश्री ने चतुर्विध धर्मसंघ को सम्बोधित किया। इससे पूर्व प्रातःकालीन कार्यक्रम में आध्यात्मिक अनुष्ठान के संदर्भ में मंत्र जप का उपक्रम रहा। आचार्य श्री ने मंत्रों का उच्चारण किया तथा चतुर्विध धर्मसंघ ने अपने आराध्य का अनुसरण कर स्वयं को आध्यात्मिक अनुष्ठान से जोड़ा।



> सद्भाव प्रत्याख्यान साधना का वह सर्वोच्च शिखर है जहाँ न पुण्य का बंध होता है, न पाप का; आश्रव का पूर्ण निरोध ही जीव को मोक्ष तक ले जाता है
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

प्रत्याख्यान की परंपरा एवं सद्भाव प्रत्याख्यान का पारमार्थिक स्वरूपः

१. प्रत्याख्यान की परंपरा व भेदः आचार्यश्री ने फरमाया कि धार्मिक परंपरा में प्रत्याख्यान का क्रम निरंतर चलता है। त्याग किसी वस्तु का भी किया जा सकता है तथा नवकारसी, पौरसी, चरम प्रत्याख्यान के रूप में भी किया जा सकता है। छह आवश्यकों में भी प्रत्याख्यान को छठा आवश्यक माना गया है।

२. आश्रव निरोध व कर्म-बंध से मुक्ति : सद्भाव प्रत्याख्यान ऐसा पारमार्थिक प्रत्याख्यान है जिसके बाद आश्रव संबंधी कोई प्रत्याख्यान अवशेष नहीं रहता, आश्रव का पूर्ण निरोध हो जाता है। सद्भाव प्रत्याख्यान की स्थिति में न पुण्य का बंध होता है और न ही पाप का बंध होता है।

जब जीव के शुभ योग होता है तो पाप कर्म झड़ते हैं अर्थात् निर्जरा होती है और साथ में पुण्य का बंध होता है। परन्तु सद्भाव प्रत्याख्यान में पुण्य अथवा पाप दोनों का ही बंध नहीं होता है। अतः सद्भाव प्रत्याख्यान आश्रवों की दृष्टि से अंतिम प्रत्याख्यान है।

३. साधना का सर्वोच्च शिखर : इस अवस्था में मन के अच्छे भावों का भी अस्तित्व नहीं रहता। आगम में कहा गया है कि सद्भाव प्रत्याख्यान से जीव अनिवृत्ति को प्राप्त हो जाता है। सद्भाव प्रत्याख्यान बहुत बड़ा प्रत्याख्यान है और साधना का मानो एक बड़ा शिखर है। जब तक बाह्य प्रवृत्ति है, इस शिखर की उपलब्धि नहीं हो सकती। साधना के शिखर पुरुष सद्भाव प्रत्याख्यान वाले साधु ही होते हैं।

चार अघाती कर्मों का क्षय एवं कषाय-मुक्ति का पाथेयः

१. दुःखों का पूर्ण अंत व मोक्ष : सद्भाव प्रत्याख्यान हुए बिना चार अघाती कर्मों का भी नाश नहीं होगा और उसके बिना मुक्ति भी नहीं मिलेगी। केवली भगवान इस अवस्था में अपने अवशेष चार कर्मों को क्षीण कर देते हैं। इसके पश्चात् साधु सिद्ध होता है, प्रशांत होता है, मुक्त होता है, परिनिवृत होता है और सब दुःखों का अंत कर देता है।

२. कषाय-मुक्ति की अनिवार्यता : आचार्य श्री ने आगे फरमाया कि राग-द्वेष से मुक्ति तो मानो सभी के लिए आवश्यक है, इसके बिना मुक्ति नहीं हो सकती—चाहे वह श्वेतांबर हों, दिगंबर हों या कोई भी परंपरा हो। कषाय-मुक्ति के बाद ही आदमी मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। अतः हम सभी को निरंतर कषाय-मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

सघन साधना शिविर, बाल-संस्कार व जिज्ञासा समाधानः

१. मुमुक्षा भाव व संयम साधनाः आचार्यश्री ने सघन साधना शिविर के संदर्भ में फरमाया कि अभी लाडनूँ में सघन साधना शिविर लगा हुआ है। जीवन में यदि मुमुक्षा भाव जाग जाए तो सघन साधना शिविर में आना और ज्यादा निष्पत्तिपूर्ण हो सकता है। मुमुक्षा भाव जागे या न जागे, लेकिन इस शिविर के माध्यम से साधना का अमूल्य अवसर प्राप्त हो रहा है। इसके माध्यम से संयम की साधना का अवसर मिल सकता है।

२. बाल-सहभागिता व जिज्ञासा समाधानः शिविर में छोटे बच्चे भी भाग ले रहे हैं, यह बहुत अच्छी बात है। सघन साधना शिविर के संभागियों में संयम की साधना का सुदृढ़ अभ्यास होना चाहिए, ऐसा निरंतर प्रयास होना चाहिए।

सघन साधना शिविरः संयम और आत्म-अनुशासन का मार्ग

पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'सघन साधना शिविर' के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि यह शिविर आत्म-अनुशासन और संयम के अभ्यास का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवसर है।

शिविर में अपनाए जाने वाले मुख्य संयमः

1. **डिजिटल संयम :** मोबाइल का न्यूनतम और केवल आवश्यक उपयोग।
2. **आहार संयम :** रात्रि भोजन का पूर्ण त्याग।
3. **कायिक संयम :** भूमि पर शयन और सादगीपूर्ण दिनचर्या आदि।

आचार्य श्री ने फरमाया कि भले ही हर व्यक्ति गृहस्थ जीवन त्यागकर पूर्ण साधु न बन सके, लेकिन अपने दैनिक जीवन में संयम के छोटे-छोटे अंशों और नियमों को स्वीकार करना भी साधना की दिशा में एक बहुत बड़ा और प्रशंसनीय कदम है। शिविर में छोटे बालक-बालिकाओं का उत्साहपूर्वक भाग लेना अत्यंत प्रसन्नता और सराहना का विषय है।

'आप तो समझदार हैं, आप साधु बन जाइए!'...

(आचार्यप्रवर का वो अनूठा तर्क, जिसने जगाई नई चेतना)

सघन साधना शिविर में छोटे बच्चों की सहभागिता पर चर्चा करते हुए पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने बाल-दीक्षा और वैराग्य के विषय पर अत्यंत व्यावहारिक व तार्किक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

'बच्चे क्या जानते हैं?' पर व्यावहारिक तर्कः समाज में अक्सर यह प्रश्न उठ जाता है कि—'बच्चे तो अभी बहुत छोटे हैं, वे क्या जानते हैं? उन्हें इतनी कम उम्र में दीक्षा क्यों दी जाए?' इस पर आचार्यश्री ने फरमाया—'मान लिया जाए कि बच्चे नहीं जानते, इसलिए उन्हें दीक्षा न दी जाए। लेकिन आप तो बड़े और समझदार हैं, आप साधु बन जाइए! जब आप स्वयं यह कहते हैं कि 'हम तो नहीं बनेंगे', तो फिर जो छोटे बच्चे वैराग्य भाव से प्रेरित होकर संयम मार्ग पर आगे बढ़ना चाहते हैं, उनके प्रति मनाही या रुकावट क्यों खड़ी की जाती है?'

आगम परंपरा और आचार्यों का इतिहासः

1. **आगमिक नियम :** जैन आगम परंपरा के अनुसार, यदि 8 वर्ष की आयु पार कर चुका बालक योग्य और सुपात्र है, तो वह दीक्षा अंगीकार करने के काबिल माना गया है।
2. **ऐतिहासिक उदाहरण :** हमारे धर्म संघ के युगपुरुष गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अपने जीवन के 11वें वर्ष (बाल्यावस्था) में ही मुनि-दीक्षा ग्रहण कर ली थी।
3. **संयम का गौरव :** हमारे संघ के युवाचार्य श्री महावीर कुमारजी एवं स्वयं पूज्य आचार्यप्रवर सहित कई संतों ने बाल्यावस्था में ही साधु जीवन स्वीकार कर धर्मसंघ का गौरव बढ़ाया है। बचपन में वैराग्य का अंकुर फूट जाना जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

ज्ञान, पुरुषार्थ और आध्यात्मिक मुकाबले का रोमांचक समापन

गंगाशहर।

तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर की ओर से आयोजित तेरापंथ प्रीमियर लीग (TPL) — एक अद्वितीय एवं रोचक आध्यात्मिक प्रतियोगिता - तीन दिनों तक तेरापंथ भवन गंगाशहर के प्रांगण में साध्वी त्रिशलाकुमारी जी के पावन सान्निध्य में संपन्न हुई। इस आयोजन में ज्ञान, पुरुषार्थ और टीम भावना का अनूठा संगम देखने को मिला। तेयुप संगठन मंत्री व प्रतियोगिता प्रभारी मयंक सेठिया ने बताया कि TPL में कुल 8 टीमों ने भाग लिया। पहले दो दिनों में 12 लीग मैच खेले गए, जबकि अंतिम दिन दो सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबले हुए। फाइनल में साहित्य रॉयल्स और वैरागी किंग्स आमने-सामने थे। कड़े संघर्ष के बाद कोणिक सेठिया के नेतृत्व में साहित्य रॉयल्स ने विजयी ट्रॉफी अपने नाम की। सभी प्रतिभागियों को तेयुप गंगाशहर द्वारा पुरस्कृत किया गया। विजेता उपविजेता के साथ सभी मैचों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को प्लेयर ऑफ द मैच भी दिए गए। विजेता टीम के कप्तान कोणिक सेठिया को अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द सीरीज की ट्रॉफी मिली। साध्वी त्रिशलाकुमारी जी ने कहा कि

साहित्य रॉयल्स टीम ने शानदार प्रदर्शन से जीता विजेता का खिताब

तेयुप गंगाशहर की पूरी टीम, अंपायर और सभी सहयोगियों की पूर्ण जागरूकता एवं कर्तव्यनिष्ठा ने इस आयोजन को सफल बनाया है, सभी साधुवाद के पात्र हैं। तेयुप अध्यक्ष देवेन्द्र डागा ने बताया कि निर्णायक के रुप में धर्मेन्द्र डाकलिया और मनोज सेठिया ने सभी 15 मैचों में समयबद्धता और सजगता के साथ सटीक निर्णय दिए। स्कोरर के रुप में कपिल नाहटा और जितेश पारख ने भी पूरी निष्ठा से अपनी जिम्मेदारी निभाई। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, प्रोफेशनल फॉर्म सहित सभी संघीय संस्थाओं को आमंत्रित किया गया था, जिनकी गरिमामय उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। प्रतियोगिता समन्वयक ललित राखेचा ने जानकारी दी कि प्रतियोगिता से 10 दिन पूर्व सभी 72 प्रतिभागियों को 400 प्रश्नों का सेट स्वाध्याय के लिए प्रदान किया गया था। आयोजन में उपाध्यक्ष मांगीलाल बोथरा, रोशन नाहटा, मंत्री दिनेश कुमार सोनी, सहमंत्री रोहित बैद, संगठन मंत्री मयंक सेठिया सहित पूरी टीम का विशेष योगदान रहा। तेयुप अध्यक्ष देवेन्द्र डागा के सफल संचालन की सभी ने प्रशंसा की। बोथरा भवन में विराजित मुनि अमृत कुमार जी ने सभी प्रतिभागियों को अध्यात्म के क्षेत्र में प्रगति करने की प्रेरणा दी और मंगलकामनाएं प्रदान की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 अक्टूबर - 01 नवम्बर 2026

सुधर्मा सभा में 'मुक्ति से क्या मिलेगा?' विषय पर पूज्य प्रवर का मंगल पाथेय

'सर्वस्व-त्यागी अपरिग्रही साधु ही बनता है तीन लोकों का स्वामी' : आचार्यश्री महाश्रमण

द्वितीय सघन साधना शिविर का हुआ भव्य समापन



लाडनूं।
19 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा के प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में लाडनूँ प्रवास के दौरान आध्यात्मिक अनुष्ठानों का क्रम अनवरत जारी है। पूज्य प्रवर ने सुधर्मा सभा में उत्तरज्झयणाणि आगम के पावन संदर्भों के साथ निर्धारित विषय 'मुक्ति से क्या मिलेगा?' पर अपनी अत्यंत गंभीर और प्रामाणिक अमृत देशना प्रदान करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान किया।

'मुक्ति' का दार्शनिक अर्थ और मोहनीय कर्म का साम्राज्यः

१. लोभ से मुक्ति का संदर्भ : आचार्यश्री ने प्रवचन के आरंभ में स्पष्ट किया कि सामान्य अर्थों में हम 'मुक्ति' को मोक्ष के संदर्भ में देखते हैं, किंतु यहाँ इस संदर्भ में 'मुक्ति' का तात्पर्य 'लोभ से मुक्ति' यानी निर्लोभता से है। यह विचारणीय है कि निर्लोभता से जीव क्या प्राप्त करता है?

२. राजा या सेनापति तुल्य मोहनीय कर्म : हमारे भीतर आठ कर्मों में 'मोहनीय कर्म' राजा अथवा सेनापति के समान सबसे अधिक शक्तिशाली और प्रमुख कर्म है। यदि यह मोहनीय कर्म क्षीण हो जाए, तो इसी जन्म या लगभग उसी काल में शेष सभी कर्मों का नाश स्वतः हो जाता है।

> जिसने सारा परिग्रह छोड़ दिया और जो पूर्णतः अकिंचन बन गया, वह अपरिग्रही साधु मानों तीनों लोकों का स्वामी बन जाता है
> **-आचार्यश्री महाश्रमण**

३. मोहनीय कर्म की अट्ठाईस प्रकृतियाँ : अध्यात्म का गहरा संबंध मोहनीय कर्म के साथ है। मोह-ममता के साथ क्रोध, मान, माया, लोभ आदि इसके परिवार के सदस्य हैं। मोहनीय कर्म की कुल २८ प्रकृतियाँ होती हैं—जिनमें २५ प्रकृतियाँ चारित्र मोहनीय की और ३ प्रकृतियाँ दर्शन मोहनीय की होती हैं। चारित्र मोहनीय की २५ प्रकृतियों में १६ मूल कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ के चार स्तर—अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी और संज्वलन) तथा ९ नो-कषाय प्रकृतियाँ सम्मिलित हैं।

आकिंचन्य का जीवन और अपरिग्रही साधु का अलौकिक वैभवः

१. आकिंचन्य की प्राप्तिः शास्त्र में उद्घाटित किया गया है कि निर्लोभता या मुक्ति से जीव 'आकिंचन्य' (अकिंचन अवस्था) को प्राप्त करता है। आदमी के पास कुछ भी हो तो वह 'किंचन' और कुछ न हो तो वह 'अकिंचन' हो जाता है। लोभ के कारण व्यक्ति में आकर्षण, आसक्ति और संग्रह की प्रवृत्ति बढ़ती है, जिससे वह अनेक वस्तुओं व व्यक्तियों का संग्रह कर सकता है।

२. तीन लोकों के अधिपति साधु : व्यवहार भाषा में जो अकिंचन होता है, वह मानों तीनों लोकों का अधिपति बन जाता है। गृहस्थ के पास जितना होता है वह उतने का ही मालिक होता है, किंतु जिसने सारा परिग्रह छोड़ दिया और जो पूर्णतः अपरिग्रही व अकिंचन बन गया, वह साधु तीनों लोकों का स्वामी बन जाता है। जो कांचन (स्वर्ण/धन) और किंचन से विरक्त हो जाता है, वही सच्चा साधु है।

३. अर्थ-लोलुपों से अप्रार्थनीय : आचार्यश्री ने आगे फरमाया कि अकिंचन जीव अर्थ-लोलुप (धन के भूखे) मनुष्यों के लिए अप्रार्थनीय बन जाता है, क्योंकि साधु के पास किसी भी प्रकार का रुपया-पैसा नहीं होता। साधु भले ही भौतिक धन न दे सके, किंतु वह ज्ञान का धन, त्याग, वैराग्य और संयम का मार्ग बताकर सबसे बड़ा उपकार करता है। बाल्यकाल में संन्यास अंगीकार कर लंबे समय तक संयम पालना मानव जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है। परिग्रह बाह्य और भीतर कहीं भी नहीं होना चाहिए।

द्वितीय सघन साधना शिविर का समापन और मंचीय प्रस्तुतियाँः

१. शिविर की सफलता व प्रस्तुतियाँ : आचार्यश्री की पावन सन्निधि में आयोजित 'द्वितीय सघन साधना शिविर' का आज समापन हुआ, जिसमें २५ महिला व १३ पुरुष शिविरार्थियों ने सहभागिता की। डूंगरचंद सालेचा ने शिविर की प्रामाणिक जानकारी प्रस्तुत की। शिविर के बालकों व बालिकाओं ने सुंदर गीतों का संगान किया तथा शिविरार्थी रिया डोसी व मधु देरासरिया ने अपने भावपूर्ण अनुभव साझा किए।

२. युवाचार्यश्री की मंगल प्रेरणा : शिविरार्थियों को उद्बोधित करते हुए युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने कहा कि सघन साधना शिविर आत्मा के ऊर्ध्वारोहण के लिए एक विशिष्ट अवदान है। पूज्य गुरुदेव के ५०वें दीक्षा कल्याण महोत्सव के उपलक्ष्य में यह उपक्रम प्रारंभ हुआ है, जिससे जैन दर्शन के सिद्धांतों को समझने की अद्भुत दृष्टि मिल रही है।

३. आचार्यश्री का पावन आशीर्वाद : आचार्यश्री ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत आयोजित इन शिविरों का असर जीवन में निरंतर बना रहना चाहिए। घर लौटने के बाद भी हमारे आचरण और संस्कारों में अच्छाई दिखाई दे। कार्यक्रम में बेंगलुरू सभा के अध्यक्ष प्रकाश बाबेल, संयोजिका नीता गादिया ने विचार व्यक्त किए तथा बेंगलोर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों व प्रशिक्षिकाओं ने 'पच्चीस बोल' पर आधारित सुंदर प्रस्तुतियाँ दीं, जिस पर आचार्यश्री ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

गाँव की बुढ़िया का वो एक सवाल...
जिसने 'गुरुजी' और 'सद्गुरु' का फर्क समझा दिया!

पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन प्रवचन से—जानिए 'गुरुजी' और 'सद्गुरु' में क्या अंतर है?

1. गाँव की वृद्ध महिला का अनूठा दृष्टांत : पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने एक अत्यंत सरल और व्यावहारिक प्रसंग सुनाते हुए सच्चे गुरु की कसौटी स्पष्ट फरमाई।

1. गाँव में गुरु आगमन की चर्चा : एक बार किसी गाँव में लोग एक वृद्ध महिला से चर्चा कर रहे थे कि आज गाँव में 'गुरुजी' पधारे हैं।

2. सहज और व्यावहारिक प्रश्न : यह सुनकर उस वृद्ध महिला ने सहजता से पूछा— 'क्या ये वही गुरुजी हैं जो पैसे माँगा करते हैं और दान-दक्षिणा लेते हैं?'

3. गाँव वालों का उत्तर : लोगों ने स्पष्ट किया— 'नहीं, ये तो पैसे को हाथ भी नहीं लगाते, उसे छूते तक नहीं हैं!'

2. 'गुरुजी' और 'सद्गुरु' का वास्तविक अंतर : जब उस महिला ने सुना कि पधारे हुए संत कंचन (धन) का स्पर्श भी नहीं करते, तो उसने अत्यंत मार्मिक बात कही: 'यदि कोई पैसे लेता है, तो उसे केवल 'गुरुजी' कहना उचित नहीं है। जिन्होंने 'कंचन' (धन-दौलत) और 'कामिनी' (सांसारिक मोह-आकर्षण) का सर्वथा त्याग कर दिया है, वास्तव में वही 'सद्गुरु' पद के योग्य हैं!'

3. मुख्य शिक्षा: आध्यात्मिक पथ की सच्ची कसौटी : यह प्रसंग आध्यात्मिक जगत के लिए एक महान संदेश देता है।

1. निःस्पृहता ही संतत्व है : आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले सच्चे संत वे ही हैं, जो भौतिक वस्तुओं, धन-संपदा और आर्थिक आकर्षणों से पूरी तरह मुक्त हों।

2. त्याग का मोल : निष्काम त्याग और अपरिग्रह की यही भावना एक सामान्य गुरु और एक 'सद्गुरु' के बीच का मुख्य अंतर निर्धारित करती है।

जैन विश्व भारती: सुधर्मा सभा में 'ऋजुता से क्या मिलेगा?' विषय पर आचार्यश्री का मंगल पाथेय

'जाके हृदय साँच है, ता हृदय प्रभु आप', सरलता ही है सच्चा धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर का संदेश: कथनी-करनी की समानता ही बनाती है जीव को धर्म का आराधक

लाडनूं।
20 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में लाडनूँ प्रवास के दौरान आध्यात्मिक अनुष्ठानों का क्रम निरंतर प्रवाहित हो रहा है। पूज्य प्रवर ने सुधर्मा सभा में मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत निर्धारित विषय 'ऋजुता से क्या मिलेगा?' पर आगम आधारित अत्यंत गंभीर, प्रामाणिक और ओजस्वी देशना प्रदान करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान किया।

कषायों का शमन और आर्जव की साधना:

१. प्रतिपक्ष से कषायों पर विजय: आचार्यश्री ने प्रवचन के आरंभ में स्पष्ट किया कि हमारे भीतर क्रोध, मान, माया और लोभ—ये चार असत भाव (कषाय) विद्यमान रहते हैं, जो आत्मा के लिए हितकर नहीं हैं। हालांकि ये सभी प्राणियों में हो सकते हैं, किसी में तीव्र तो किसी में मंद होते हैं। आगम में इन चारों को प्रतिपक्ष भावों द्वारा जीतने का मार्ग बताया गया है—क्रोध को उपशम से, मान को मार्दव से और माया को आर्जव (सरलता) भाव से जीता जा सकता है।

२. सरलता बनाम कुटिलता : पूज्य प्रवर ने फरमाया कि सरल और कुटिल एक-दूसरे के विलोम हैं। जहाँ सरल व्यक्ति का व्यवहार, चिंतन और जीवनशैली सरलता से ओत-प्रोत होती है, वहीं कुटिल व्यक्ति पग-पग पर कुटिलता का आचरण करता है।

३. अहिंसक संकल्प व अनुप्रेक्षा : आर्जव की साधना के लिए प्रातःकाल ही मन में यह दृढ़ संकल्प करना चाहिए कि मुझे छल-कपट नहीं करना है। वाणी और अन्य क्रियाओं में पूरी जागरूकता रखनी चाहिए ताकि किसी के प्रति वंचना न हो। नियमित अनुप्रेक्षा के अभ्यास से आत्मा में सरलता का विकास होता है और व्यक्ति कुछ अंशों में शुद्ध होता है।

ऋजुता के सोपान, साधुजीवन और अविसंवादन का मर्म:

१. सरलता और सच्चाई का अभेद्य संबंध : आचार्यश्री ने फरमाया कि जिसके हृदय में सच्चाई और सरलता होती है, वहीं प्रभु का वास होता है। जहाँ सच बोलना कठिन या प्रतिकूल प्रतीत हो, वहाँ मौन धारण कर लेना चाहिए, किंतु असत्य का आश्रय कभी नहीं लेना चाहिए, जिससे व्यक्ति झूठ के पाप से बच सके। व्यक्ति में इतनी निर्भीकता होनी चाहिए कि उचित स्थान पर निडर होकर सत्य प्रकट कर सके। यदि छद्मस्थता के कारण कभी साधु से भी कोई भूल हो जाए, तो उसे गुरुसमक्ष सरलता से स्वीकार कर लेना चाहिए।

२. काय, भाव, भाषा ऋजुता और अविसंवादन : आगमिक प्रश्न 'आर्जव से जीव क्या प्राप्त करता है?' का उत्तर देते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि आर्जव से जीव काय-ऋजुता, भाव-ऋजुता, भाषा-ऋजुता और अविसंवादन को प्राप्त करता है।

३. कथनी-करनी की समानता : अविसंवादन का अर्थ है—कथनी और करनी में पूर्ण समानता। शरीर से वंचना न करना, वाणी से अयथार्थ न बोलना, भावों में ऋजुता रखना और कथनी-करनी को एक समान रखना ही असली साधना है। जब जीव अविसंवादन से संपन्न होता है, तब वह वास्तविक अर्थों में धर्म का सच्चा आराधक बन जाता है। गृहस्थों को भी अपने जीवन में सरलता और कथनी-करनी की समानता बनाए रखने का निरंतर प्रयास करना चाहिए।

आध्यात्मिक अनुष्ठान की संपन्नता एवं चेन्नई ज्ञानशाला की प्रस्तुतियाँ:

१. अनुष्ठान संपन्नता की घोषणा : मुख्य मंगल प्रवचन के उपरांत पूज्य आचार्यश्री ने आध्यात्मिक अनुष्ठान के विधिवत संपन्न होने की घोषणा की।

२. चेन्नई ज्ञानशाला की प्रस्तुतियाँ : आचार्यश्री की पावन सन्निधि में आज चेन्नई ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी विशेष रूप से उपस्थित थे। तेरापंथी सभा चेन्नई के अध्यक्ष महेन्द्र माण्डोत ने अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी सुंदर और मनमोहक प्रस्तुतियां दीं, जिस पर पूज्य प्रवर ने सभी को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।



'आचार्य श्री तो भोले हैं!'... जब मुनि नथमल जी रा शब्द सुण'र सभा हैरान रह गई!

पूज्य प्रवर ने मुनि नथमल जी (टमकोर) और युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी का एक अत्यंत मधुर प्रसंग सुनाया।

1. ऐतिहासिक संस्मरण : मंच से गूँजे श्रद्धा के सहज बोल :

श्रद्धा की अभिव्यक्ति : एक बार प्रवचन के दौरान मुनि नथमल जी सभा को संबोधित कर रहे थे और मंच पर परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी विराजित थे।

सहज शब्द-प्रयोग : अपने संबोधन के दौरान आचार्यश्री तुलसी के प्रति अगाध श्रद्धा व्यक्त करते हुए मुनि नथमल जी के मुख से सहज ही निकल गया— 'आचार्य श्री तो भोले हैं।'

2. 'भोले' शब्द का पावन स्पष्टीकरण:

तुरंत समाधान : गुरुदेव के समक्ष ऐसा प्रयोग होते ही मुनि नथमल जी ने भाव-विशुद्धि के साथ तुरंत स्पष्टीकरण दिया।

साधुता की पहचान: उन्होंने फरमाया कि साधु को तो स्वभाव से 'भोला' (सरल) ही होना चाहिए। साधुता का मूल आधार ही ऋजुता और निष्कपटता है।

3. प्रसंग से प्राप्त अमूल्य शिक्षा : सरलता+दक्षता : आचार्य श्री ने इस घटना का आध्यात्मिक और व्यावहारिक मर्म समझाते हुए पावन संदेश प्रदान किया:

'भोलेपन' का वास्तविक अर्थ : भोला होने का तात्पर्य अज्ञानता, नादानी या मूर्खता कदापि नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ आत्मा की निष्कपटता, सरलता (ऋजुता) और पारदर्शिता है।

सच्ची साधुता और प्रबंधन : साधु का अंतःकरण छल-कपट से पूरी तरह मुक्त और निष्पाप होना चाहिए।

दक्षता का संतुलन : सरलता के साथ-साथ साधु को अपने दायित्वों, संघ-प्रबंधन और ज्ञान के संपादन में पूरी तरह 'दक्ष' (Expert) होना चाहिए।

एक वचन... और बन गए लंका के राजा!

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के मुखारविंद से: विभीषण प्रसंग द्वारा कथनी-करनी की एकरूपता का बोध:

1. विभीषणकाप्रसंग: वचनकीअटूटनिष्ठा पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने रामायण के ऐतिहासिक प्रसंग का उल्लेख करते हुए वचनबद्धता की महिमा स्पष्ट फरमाई:

श्री राम का वचन : जब विभीषण शरण में आए, तब मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने उन्हें 'लंकेश' कहकर संबोधित किया था।

प्रतिबद्धता का निर्वहन : भगवान राम ने अपने उस मुख से निकले वचन को निभाने के लिए विभीषण को लंका का राजा बनाया। यह उनके वचन की अटूट प्रामाणिकता और निष्ठा का अनुपम उदाहरण है।

2. कथनी और करनी में समानता ही सज्जनता : इस पावन उदाहरण के माध्यम से पूज्य आचार्य श्री ने जीवनोपयोगी सूत्र प्रदान किए–

जो कहा, उसे पूरा करो : एक विवेकशील और श्रेष्ठ व्यक्ति को जो बात एक बार कह देनी चाहिए, उसे पूरा करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

नीयत की पवित्रता : यदि किसी अपरिहार्य परिस्थिति में बदलाव करना भी पड़े, तो नीयत साफ़ और स्पष्ट होनी चाहिए, न कि छलावा या बातों को घुमाना-फिराना।

3. जीवन में पारदर्शिता का आचरण: त्रि योग की विशुद्धि: आचार्य प्रवर ने ज़ोर दिया कि साधक के जीवन में पूर्ण पारदर्शिता (Transparency) होनी चाहिए।

कपट से मुक्ति: मन में कुछ और हो, वाणी से कुछ और कहा जाए और आचरण में कुछ तीसरा ही नज़र आए—ऐसी भिन्नता सज्जनता का लक्षण नहीं है। अपनी बात के प्रति पक्का, सच्चा और स्पष्ट रहना ही वास्तविक धर्म है।

कपट सूं जीत्या पछे भी काई मिलै? जाणो पूज्य प्रवर री वाणी में 'साच' अर 'सूरवीरता' रो असली मोल!

'पूज्यप्रवर री पावन वाणी में गूँज्या प्रेरक गीत सूं जाणो— साच री राह पर चालण रो असली मोल!'

1. कपट का अंत पश्चाताप : छल-कपट और असत्य से सामयिक काम निकाल भी लिया जाए, तो अंत में केवल अशांति, ग्लानि और पछतावा ही हाथ लगता है।

2. सत्य ही सच्चा शौर्य है : सच बोलने के लिए भीतर अपार साहस (शौर्य) चाहिए। कायर व्यक्ति ही डरकर सच को छुपाने या झुठलाने का प्रयास करता है।

3. सरलता का मार्ग : जीवन में निर्भय होकर सत्य और ऋजुता को अंगीकार करना ही आत्मा के कल्याण का एकमात्र श्रेयस्कर मार्ग है।

4. सम्पादकीय संदेश : 'झूठ का संबल लेकर क्षणिक लाभ तो मिल सकता है, पर आत्म-शांति केवल सत्य की राह पर ही संभव है। पूज्यप्रवर का यह संदेश निर्भयता और निष्कपटी जीवन जीने का पावन पाथेय है।'

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां







अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 अक्टूबर - 01 नवम्बर 2026

आचार्य श्री ने 'क्षांति से क्या मिलेगा'? विषय प्रदान की अमृत देशना

'कम खाना, गम खाना और नम जाना ही है जीवन की शोभा' : आचार्यश्री महाश्रमण

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने प्रदान की सघन साधना शिविरार्थियों को मंगल प्रेरणा

लाडनूं।
18 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति के प्रेरक, शांतिदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने लाडनूँ स्थित सुधर्मा सभा में 'क्षांति से क्या मिलेगा?' विषय पर आगम सम्मत पावन वाणी से चतुर्विध धर्मसंघ को आध्यात्मिक अभिसिंचन प्रदान किया।

यति-धर्म में 'क्षांति' का स्थान और श्रमण की शोभाः

१. यति-धर्म का प्रथम अंग : आचार्यश्री ने फरमाया कि जैन परंपरा में दस प्रकार के 'यति-धर्म' बताए गए हैं, जिनमें पहला और सर्वाधिक मौलिक धर्म है—क्षांति (क्षमा/सहिष्णुता)।

२. दीक्षा कालीन मंगल आशंसा : पूज्य प्रवर ने स्मरण कराया कि जब साधु-साध्वी की दीक्षा होती है और उन्हें रजोहरण प्रदान किया जाता है, उस समय ज्ञान, दर्शन, चारित्र, क्षांति और मुक्ति में निरंतर वर्धमान (प्रगतिशील) रहने की मंगल आशंसा की जाती है। श्रमण की वास्तविक शोभा शांति और क्षमा भाव से ही होती है।

३. तीर्थंकरों का सर्वोच्च आदर्शः जैन शासन में आध्यात्मिक दृष्टि से 'तीर्थंकर' सर्वोच्च पद होता है। तीर्थंकर को कभी गुस्सा (क्रोध) आता ही नहीं है, क्योंकि उनके भीतर का क्रोध पूर्णतः क्षीण हो चुका होता है।

क्षांति से परीषह-जय और व्यवहार की सावधानी :

१. परीषहों पर विजयः 'क्षांति से जीव क्या प्राप्त करता है?' का आगमिक उत्तर देते हुए आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि क्षांति का अर्थ है क्रोध पर विजय प्राप्त कर लेना और सहना यानी सहिष्णुता रखना। क्षांति से जीव जीवन में आने वाले विभिन्न 'परीषहों' (कष्टों/प्रतिकूलताओं) को सहजता से जीत लेता है।

२. साधु का आचरण और सामाजिक विवेक : पूज्यश्री ने फरमाया कि यदि साधु को कोई गाली भी दे दे या बुरा व्यवहार करे, तो भी साधु का परम धर्म है क्षमा, क्षांति और शांति बनाए रखना। हमारा प्रयास कभी किसी को तकलीफ में डालने का नहीं होना चाहिए। साधु को विहार करते समय या बड़े शहरों में चलते समय ट्रैफिक की पूरी सावधानी रखनी चाहिए—हम किसी को संकट में न डालें, बल्कि दूसरों के भीतरी संकट को दूर करने का प्रयास करें।

पारिवारिक, सामाजिक जीवन में क्षमा और सफलता का त्रिसूत्रः



> आक्रोश और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी क्षमा और सहिष्णुता बनाए रखना ही परीषह-जयी बनने का सच्चा मार्ग है
>
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

'ब्रह्मा कहो या महादेव... हमारी तो एक ही शर्त है!'

'आप नाम चाहे जो बोल दो... ब्रह्मा कहे, विष्णु कहे या महादेव कहे—हमें कोई आपत्ति नहीं है! हमारी तो बस एक ही कसौटी है कि भीतर से राग-द्वेष का क्षय हुआ है या नहीं!'

पूज्य गुरुदेव ने वीतरागता की कसौटी को स्पष्ट करते हुए शास्त्रों के सुप्रसिद्ध श्लोक का उच्चारण किया:

भवबीजांकुरजनना रागाद्याः
क्षयमुपगता यस्य।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरो जिनो
वा नमस्तस्मै॥

1. हमारा कोई आग्रह/दुराग्रह नहीं: पूज्य गुरुदेव ने स्पष्ट फरमाया कि ईश्वर को किस नाम से पुकारा जाता है, यह गौण है। चाहे कोई उन्हें ब्रह्मा कहे, विष्णु कहे, महादेव कहे या जिन (अर्हत) कहे—सत्य के मार्ग पर इसमें कोई बाधा नहीं है।

2. एकमात्र कसौटी (वीतरागता) : हमारी केवल एक ही शर्त है—जिस महान आत्मा के संसार (जन्म-मरण) के बीज और अंकुर को उत्पन्न करने वाले राग-द्वेष आदि दोष सर्वथा नष्ट हो चुके हैं, जो पूर्णतः वीतराग बन चुके हैं, हम उन वंदनीय सत्ता को बारंबार नमन करते हैं।

('कुंड में पानी नहीं, तो बाल्टी में क्या आएगा?'... पूज्य प्रवर का अनूठा दृष्टांत!)

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि— तीर्थंकरों की आत्मा रूपी कुंड से क्रोध के बीज सर्वथा नष्ट हो चुके हैं। जब भीतर क्रोध है ही नहीं, तो बाहर आने का प्रश्न ही कहाँ उठता है!

1. तीर्थंकरों की अलौकिक करुणा और क्षमा

वासुपूज्य भगवान की स्तुति : पूज्य प्रवर ने वासुपूज्य भगवान की महिमा का गान करते हुए फरमाया—

इन्द्र थकी अधिका ओपै,
करुणागर कदेय नहीं कोपै।
वर साकर दूध जिसी वाणी,
प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी।।

इंद्र से भी अधिक शोभा : तीर्थंकर इंद्रों से भी अधिक कांतिवान और शोभायमान होते हैं। वे करुणा के सागर हैं और उनमें क्षमा का भाव पूरी तरह स्वाभाविक होता है।

क्रोध का सर्वथा अभाव : जैन शासन में 'अर्हत' पद सर्वोच्च माना गया है। इतने ऊँचे और गरिमामय पद पर आसीन होने के बावजूद तीर्थंकरों के भीतर क्रोध का लेशमात्र भी स्थान नहीं होता।

2. कुंड का दृष्टांतः भीतर कुछ नहीं, तो बाहर क्या आएगा?

सरल उदाहरण : आचार्य श्री ने समझाया कि यदि किसी कुंड में पानी ही न हो, तो उसमें बाल्टी डालने पर पानी नहीं निकल सकता।

आत्म-शुद्धि : इसी प्रकार, तीर्थंकरों की आत्मा रूपी कुंड से क्रोध के बीज पूरी तरह समाप्त हो चुके हैं। जो चीज़ भीतर मौजूद ही नहीं है, वह व्यवहार में कभी प्रकट हो ही नहीं सकती।

१. संस्थाओं और परिवारों में शांतिः गृहस्थ जीवन का मार्गदर्शन करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि चाहे परिवार हो, समाज हो, संगठन हो या कोई भी धार्मिक, सामाजिक या राजनीतिक संस्था हो—जहाँ सहिष्णुता होती है, वहीं शांति बनी रह सकती है। व्यक्ति की समाधि और आत्म-कल्याण में भी यह सहिष्णुता परम सहायक बनती है।

२. जितेंद्रियता और सहने का भाव : यदि कोई कटु वचन भी बोल दे, तो साधु को विचार करना चाहिए कि 'सहना मेरा धर्म है, मैं श्रमण हूँ, साधु हूँ।' ऐसा जितेंद्रिय साधु जो प्रतिकूलताओं को सहन करता है, वही सर्वत्र पूज्य होता है।

३. जीवन-सुधार का त्रिसूत्रः पूज्य प्रवर ने साधु और गृहस्थ दोनों के लिए तीन अत्यंत व्यावहारिक और स्वर्णिम बातें बताईं–

–कम खाना (ऊनोदरी) : कम खाने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

–गम खाना (क्षमा/सहनशीलता) : क्षमा और सहने का भाव रखने से जीवन में शांति बनी रहती है।

–नम जाना (विनयशीलता) : उचित व्यक्तियों के प्रति विनयशील होने से जीवन में 'क्षांति' का निरंतर विकास होता है।

आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा दी कि जीवन में जब भी आक्रोश आदि परीषह आएँ, उस समय यदि हमारी क्षांति और सहिष्णुता बनी रहे, तो हम परीषह-जयी बन सकते हैं। सघन साधना शिविर का समापन और ज्ञानशाला/जैन विद्या प्रस्तुतियाँ।

(शेष पेज 12 पर)

अर्हम्

मुनिश्री रमणीय कुमारजी का देवलोकगम



जीवन परिचय

जन्म	:	विक्रम संवत् 2019, वैशाख कृष्ण अष्टमी
मूल निवास	:	छापर
पिता	:	स्वर्गीय श्री भीकम चंद जी बैद
माता	:	श्रीमती किरण देवी बैद
दीक्षा	:	विक्रम संवत् 2070, मृगसर कृष्ण दशमी, बीदासर
संसारपक्षीय पत्नी	:	साध्वी श्री ओमप्रभा जी
संसारपक्षीय पुत्री	:	साध्वी श्री प्रणवप्रभा जी
देवलोकगमन	:	16 अक्टूबर 2026, आश्विन शुक्ल ६, शुक्रवार जैन विश्व भारती लाडनूं

(सिद्धि तप की आराधना के अंतर्गत सात दिवसीय तपस्या के दौरान मुनि श्री रमणीय कुमारजी का देवलोकगमन हुआ।)

डिग्री सूं बड़ो सुभाव! जाणो पूज्य प्रवर री नजरां में कुण है 'सहवर्ती रत्न'?

पूज्य आचार्य श्री ने स्पष्ट फरमाया कि किसी भी संस्था, समाज या धर्मसंघ की व्यवस्था को सुचारु चलाने के लिए सहवर्ती की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। एक उत्तम सहवर्ती बनने के लिए अंग्रेजी या संस्कृत में निपुण होना या बड़ी डिग्रियां होना अनिवार्य नहीं है।

सहवर्ती के दो मूल गुणः विद्वता से बढ़कर भाव और शांतिः

पूज्य आचार्य श्री ने स्पष्ट फरमाया कि यदि व्यक्ति में निम्नलिखित दो गुण हैं, तो वह अनमोल है:

1. सेवा भावना : कार्य को केवल औपचारिकता से नहीं, बल्कि भीतर की सच्ची इच्छा, आत्मीयता और भाव के साथ करने की वृत्ति।

2. शांत प्रकृति : स्वभाव में शांति और धैर्य का होना, जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी क्रोध और उत्तेजना को पास न आने दे।

'सहवर्ती रत्न' : जो संघ और समाज को कर दे निहाल!

1. अगाध धैर्य और निष्ठा : जिन्हें कितना भी कार्य सौंप दिया जाए, फिर भी जो कभी आवेश या तनाव में नहीं आते, वे साथी किसी भी व्यवस्था को अत्यंत सुंदर और सुदृढ़ बना देते हैं।

2. व्यक्तित्व की सार्थकताः आचार्य प्रवर ने ऐसे समर्पित साथियों को 'सहवर्ती रत्न' की संज्ञा दी है।

3. गुणवत्ता की कसौटी : भले ही कोई व्यक्ति मंच पर भाषण देने या व्याख्यान कला में निपुण न हो, किंतु यदि वह मिलनसार है, नम्र है और सेवा में सदैव तत्पर रहता है, तो उसका व्यक्तित्व संघ और समाज को निहाल करने वाला होता है।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।